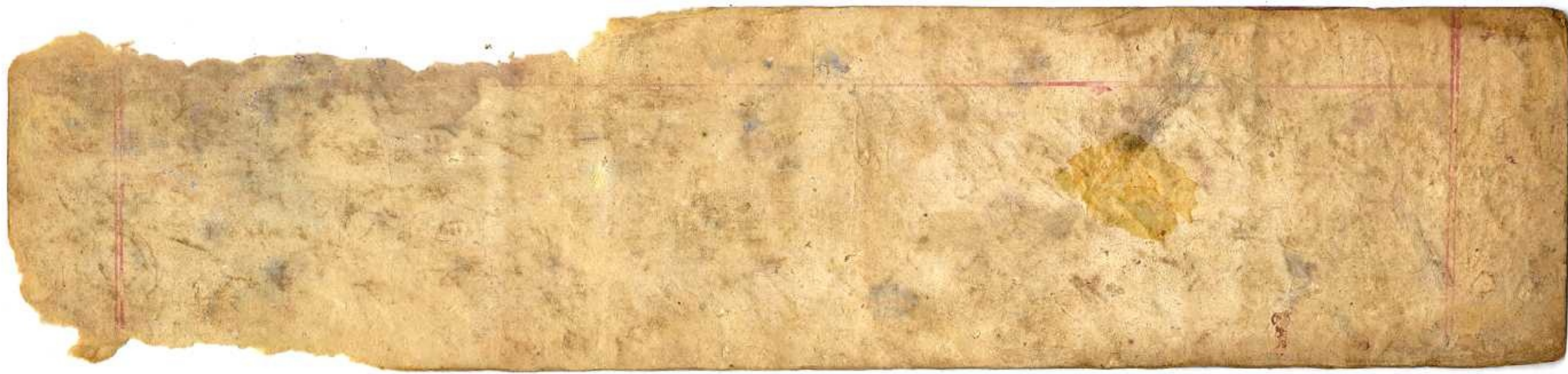








च

२

हस्यसिद्धिर्लक्ष्मीः॥ सजासावतनीप्रवृत्तिं सर्ववृद्धेः सूर्याचिनः॥ ४४ ध्रुवकर्मसमस्तमनुजान् धनं यनं॥ नाम्नायेक
लेखी ननु सत्त्वानामाभिसिद्धयेन॥ अयुकाधमिदं ननु अदृष्टमधुलस्यदि नान्यमधुलपुनितुस्यमनुज
कनुदधियेन॥ मधुलं यद्यु शीघ्रस्यप्रविशामः समादिनः॥ अयुकाधमिदं ननु अदृष्टमधुलस्यदि॥ नान्य
मधुलपुनितुस्यमनुजान् कनुदधियेन॥ मधुलं यद्यु शीघ्रस्यप्रविशामः समादिनः॥ ४५ ज्ञापनयनं यद्यु नस्य
मनुकनुदधियेन॥ गुनुरकः कृया नू द्वे मनुयानीयनायः॥ रुक्यधुधनं नि सं नस्यननु प्रदधियेन॥ ४६

गुवं वृद्धां धामयः कथिधगीलारम्बी॥ उन्नीतः॥ यद्यु संस्यमलादृष्टदधियेन मुरुमी॥ समस्तव्याधिरिगुना
विश्वमृगमलीकृतः॥ यद्यु संस्यमलादृष्टदधियेन मुरुमी॥ समस्तव्याधिरिगुना
ननकनीयनयाधि यदि वृद्धे संस्यमलादृष्टदधियेन मुरुमी॥ समस्तव्याधिरिगुना
नीनगुवदं नरिद्यन॥ नस्माच्चमधुलं यद्यु शीघ्रस्यप्रविशामः समादिनः॥ अयुकाधमिदं ननु अदृष्टमधुलस्यदि॥ नान्य
मधुलपुनितुस्यमनुजान् कनुदधियेन॥ मधुलं यद्यु शीघ्रस्यप्रविशामः समादिनः॥ ४५ ज्ञापनयनं यद्यु नस्य
मनुकनुदधियेन॥ गुनुरकः कृया नू द्वे मनुयानीयनायः॥ रुक्यधुधनं नि सं नस्यननु प्रदधियेन॥ ४६

पि १

स्यप्रदिबुद्धसमादि ॥ अष्टादीनां तथाभिव्यः ॥ अष्टमजिह्वास नापव । रिप्रमृष्टिवज्रहावृष्टि कालनसंभयः ॥
नभामनममादिवि ॥ अष्टाभिर्गठं नानने । मनुयैककल्लवीनास्मिन्सुगुपेर्वहनाय ॥ ॥ ॐ अथ कले
ॐ वीनायाली वधुमहानोवधनकुमकुवमानवटलः पुथमः ॥ १ ॥ अथरगवर्गि ॥ अथवज्रीरगवत्तं व
ॐ महानोवधं गारुनालिजिह्वादि ॥ मधुलस्यकियत्मानवर्तनी मयकनदि । लिखितवीनधामनम ॥
किं कुदिमयुरा ॥ ॥ अथरगवानाद ॥ ॥ मधुलस्यरवत्मानवैकदत्तद्विदकैस्तकैरिहसंवा

वा

यतुः यथपमानेन ताधिकं ॥ यस्यमस्येव दूर्ध्वननावावर्गकननव । यदुनम्वगुर्धनं यदुस्मान
घस्यविर्गं ॥ अष्टाभिर्गठं नानने । मनुयैककल्लवीनास्मिन्सुगुपेर्वहनाय ॥ ॥ अथ कले
तथापि दीहनाद्विद्वानयदि कौ ॥ मूलसुगुवहिसस्यो यार्धनेवनकापुर्वी । वजावली ॥ अथनेव अस्
मृष्यैकल्यपेन ॥ अथविगुनिनकर्म्यान् दाननावनमूरुमं । विप्रवज्रम ॥ लिखितवज्रपाका नवविष्टि
न ॥ कल्यवृक्षादिदिग्दर्शकं यदुनायामेधुली । दुष्टमेककुकर्तव्यवज्रकरिकयालकं ॥ मस्यपूर्वा
यक्रव च निमंशुल

म

दिक् विषय प्रम हो समा लिखे ता न व म म ध म न स्य म ध र व उ स नी ल क ॥ व र ह वी कि न न व व र क
रि क या लि क ॥ ए व व की कि न र वे उं ॥ ए व र ह स मा लि खे न ॥ द क्षि ण यी न व र ह नु यु क न त्रे न सी लि खे न
। य म्भि म न क व र ह नु न क य म न वि द्वि न ॥ उ र न र व उ मा र्ग नु य म व र ह स मा लि खे न । व क ह वि द्वि
न क र्मि म त्रि न की । श म्भि नालि खे न ॥ नै म र्ग यी न व र ह नु लि खे न न त्रि न सी लि खे न । वा यु वी व न थ म्भा
का न क य प्र स वि द्वि न ॥ ०० ॥ नै म र्ग यी न व र ह नु नी ली ल स म न्वि न । व नु सूर्य व नि स नु स र्व वि द्वि

४

४

ना २

प्र क ल य म् ॥ न ॥ म ॥ ल मि दी प्रा की म म ली का र्थ सा ध न । अ थ व म ल क र्ण ग य ह नू य ह स र्ग लि खि न ॥
पू र्व म धु ल लि ख म धा क र्ण व ल लि ख न । स र्ग ड ड व व क र्ण व पू र्व ॥ व ली लि ख न ॥ न थ यी न व र्ण
स र्ग य र्ण न का व ली लि ख ॥ उ र न र व उ मा र्ग नु य म व र ह स मा लि खे न । व क ह वि द्वि
लि ख न ॥ वा यु वी लो दि न द वी ना ग व र्ण स मा लि खे न ॥ ०० ॥ नै म र्ग यी न व र्ण स मा लि खे न ॥ द क्षि
म म म धु ली । अ थ म धु ली धि य न म नु र व नि ॥ उं ग्री व ह म ता नी य ह स र्व व नि वा स दि न आ ग ॥ २

ॐ ह्रीं वंदोः॥ अग्रमं तुल्यं अग्निं नमस्कृत्य २ ह्रीं ह्रस्वस्वाहा॥ अन्ननाकं अथ प्रवक्ष्यामि वक्ष्यामि कल्पयुज्यमगं॥
 अथ पूजामकुरु वमि॥ ॐ कृष्णवल्लवजयपूषीप्रमिच्छ ह्रीं ह्रस्व॥ ॐ अनाव न वजयपूषीप्रमिच्छ ह्रीं ह्रस्व॥
 पीतावल्लवजयपूषीप्रमिच्छ ह्रीं ह्रस्व॥ ॐ वक्रावल्लवजयपूषीप्रमिच्छ ह्रीं ह्रस्व॥ ॐ अनावल्लवजयपूषीप्रमिच्छ
 ह्रीं ह्रस्व॥ ॐ इव वज्रिप्रमिच्छ ह्रीं ह्रस्व॥ ॐ मां वं वज्रि वजयपूषीप्रमिच्छ ह्रीं ह्रस्व॥ ॐ पिबु न वज्रि वजयपूषी
 वजयपूषी

प्रमिच्छ ह्रीं ह्रस्व॥ ॐ नागवज्रि वजयपूषीप्रमिच्छ ह्रीं ह्रस्व॥ ॐ ऋषीणा वज्रि वजयपूषीप्रमिच्छ ह्रीं ह्रस्व॥ पूषी
 दीप्यमाना धूपं गन्धं नेवाप्रीभवत॥ पूजाय या य वा नो ह्यकुप्याद्वै मधुलस्यसि॥ अदा अनावल्लवाम
 ह्यमा हवतासनी विनः न स्येवमधुला ह्यमं प्रवीणीना वनादिक॥ अं च यामा जी प्रह दनयं यम मधुल
 कल्पना॥ कुर्यादकाय विरु न पूर्वसेवा कुरु समः॥ मधुल वनि वक्षो यथा गिनीया स गत्सीयुनी॥ ६

राज्यमद्यमांसं च वर्ज्यं बृहद्गर्भम् ॥

[illegible][illegible]

वायुर्वदशिषीविप्रनू॥ उं हन २ मानय २ सर्व भगुन हानखज हं २ रुट ॥ नगार्मयाभ शिषकः॥ नाम
दिमर्पयाभः॥ मस्य नर्क नीयक वावंमदसुद वायुर्वगूवगूश्रुशिषी २ प्रनू॥ उं ७२ द्वा २ कद २ सर्व
दूषणूया अनवन्ध २ मदासय धर्मन स्वाहा॥ नगार्मनाम शिषकः॥ शिषीयलुमता नायहामूद
मायुवि ॥ मदाका जे १ यलुमंमालं ॥ उं द ७१ रागवनूक स्यावलसिद्धि त्विहं २ रुट ॥ नगपूर्ववगूश्रु

२२

शिषीयनू॥ प्रकं वंसाकस्य कृष्यदिवर्ग ॥ रुदनययावलनाम शिषकादयः॥ ०० निर्यया शिषकः
मीगांनुमकूटा शिषीकं ल्यक वासिधूना शिषीकंदगानू॥ यलुमतादविनूया शिषा आलम्बि॥ उं उं रागव
नी आवि ॥ २ अस्मिदं दयं हं २ रुट ॥ लोहादिक र्दिकीनस्यादक्षिण दक्षेदगानू॥ उं क र्दिक सर्वमाजा
नीमसि क र्दिक म क दयं हं २ रुट ॥ वामदक्षे नकयानं द्रव्यादिक नग्वादगानू ॥ उं वं उं कया ल सर्वसगुनं

हं॥ का

धनिकधनप्रदं हं॥ नदरुगवनी मद्रमाय विष्णुमदा कात्रघात्रं व्या॥ उं॥ उषवजिसिद्ध त्वं हं॥
उर्वस्त्रीयं कृष्णदि वर्धरु दनयं यथा गिनी नाम्ना शिषिं वतू॥ आसा कुपुष्पा शिषक कस्तने ज्याया शि
षका रावनि॥ अथ ग्रन्था शिषका रावनि॥ शिष्या उनुं वस्तु दिशिः सैयुज प्रभू॥ न ह्ये स्वप्न नावां की २
नानूयं प्रो वन मन्त्रिनी निर्या न प्रभू॥ ०००॥ निर्या मिना तुल्यं सर्वकामा सुख पुदा मय काम सूर्य न ग

दप २

हं॥

हं॥ नाथ कयां कन॥ नगा गुनं नमस्तु त्वः॥ शिष्या वही न गच्छतू॥ उं॥ यद्यु मदा नावहा हं॥ हं॥ नमस्तु न
यं निष्कृ नू गुनं पुनः मद्रमां सा दिशिना त्तानं यजयित्वा पुष्पा २० सैमय्य सैयुटी रूपः नदु हं॥ न गच्छ
सो निगैयुर्ह पुन नो दाववस्तु शिष्या॥ नाहु दय गस्य जिह्वा ग्राम नामिका उं॥ कायां डव्यं गृहीत्वा
हं॥ हं॥ का न निरखतू॥ नगा मदा सुख निगिया ठ प्रभू॥ न गच्छ वद नू अथा हं॥ न वृद्ध सान मृत्या दयामि॥

५१२

गङ्गाप्रमहासूक्तं : अथः साधकभासार्त्तं बहु भाष्यम् ॥ काले ५ ॥ त्वायुस्तु २५ ॥ इषवत्रिभूयनस्यैवृट्क
 त्वायमान्यालस्यैवृ ॥ नमो नित्यनेजुभूयस्यैवृ कस्यमधमीसादिभिर्महवृकैक्यैवृ ॥ ८
 ०० मियुस्तु रिषकः ॥ ॥ ०० एकैवृ नास्तुभीवृ नस्तु नास्तुभीवृ नस्तु नास्तुभीवृ नस्तु नास्तुभीवृ
 नीमः ॥ १ ॥ अथरुग्वादिमाह ॥ रावीनवीकथं बहुमस्तु नास्तुभीवृ नस्तु नास्तुभीवृ नस्तु नास्तुभीवृ

वगर्त्तयनमभ्यन॥ ॥ अथ शगवानाह॥ ॥ मनोऽनूक नेक्रेषादासर्वविद्रववर्जित। आसर्तक
 ल्यप्ररुद्रुप्रथमं संसमादिनः॥ यथमरावमस्मेति द्वितीयं कनू संविरावयम्। हृमीयं गरावयम्
 मृदिनां उद्योदासर्वलक्षणः॥ गनाहदि रावय द्वितीयं ययन्युत्रविह्वलं॥ नक्षिः यूनगोध्यामान
 निष्यन्नं वधु नावर्ग। यज्ञप्रमनसागच्छ पूष्य धूपादिशिर्व्वधः॥ गदगुदभयत्यार्यसर्वयुधैषु

मि २

दा

मादयम्॥ मिसत्रैर्गमर्कैर्ग्याद्यायनाधखनामधि। आत्मानं यनगादत्वायूधैश्चयत्रिनामयम्॥ गग
 युनिधनं कृत्वा वाधिविरुक्तु नामयम्। नमस्कारं गगुर्कुर्यान्नस्मिः सहनयूनः॥ यठित्वा मन्त्रमम
 दिभ्युन्मना ध्यानमायनेम्॥ उभयनासोन वज्रस्वरवात्सकाहं॥ विंरुप्रस्मिः दग्धसहं कानयम
 त्रगः॥ कर्षून्दाहर्नध्यात्वा त्रस्मिन्ध्यायिन कल्पयम्॥ सर्वमाकाशसंकासं सहा मर्त्यं विरावयम्॥

भुङ्क्षुटिक वस्त्रेकुमात्मदस विराजयन् ॥ अग्रगण्यवपय्यभ्यर्चयन् नलं वं वदुष्टय ॥ निष्यन्नं रा
 वपय्यन वान विरुक्तं लोभिकं ॥ प्रकाशं वगमा चो ध्यात्वा कूटी गमनीयक ल्यपेन ॥ वदुष्टय वदुष्ट
 वी अष्टसु सुपुष्पशिर्षे ॥ ध्यात्वा सुसुध कयपी विषयसु दनान्विर्ग ॥ यं कात्रं वीरुमजुर्न मग्रा कय
 वपय्य विधु ॥ न विनं शानका न ॥ न दूर्ध्वं कर्तुं पूनः ॥ नर्क्या मक्षया ध्यात्वा सामका सहसं पून ॥ स

कमलपुष्पागिन्नु मस्या मूर्ध्नि दिव्यते ॥ नानासंक्रान्ति योगेन मामकी रागय मसा ॥ ननु भुङ्क्षु नसी पुनः
 परुष्टस्यारजमदन ॥ निष्यन्नं वदुष्टय वनिः सत्र वरुण रुमः ॥ हन्यात्तु केन वा क्षीर्यं यिन नय
 ध्यात्वा सपु नमाम कायी नमस्तु ॥ नदिनं वै प्रकल्यपेन ॥ ननादि मामकी गृह्यमाननं सी प्रका
 भयन् ॥ नयाः वी त्रिं गिर्न ध्यात्वा नूद्वयवत्री स्व नूयकः ॥ ननु ग ॥ न कर्तुं स वी वा मया न समधिनिवृ

नः॥गर्जनीगर्जयनं वडं शुभं निषीदनी॥संज्ञात्रयदं सद्यः शत्रुमंत्रविमर्दनी॥वामरुमिसुज्ञानूः
२॥ककवाक्षरयानका॥स्वैवसूक्ष्मगर्जयं नु वामज्ञानूयमःसिद्धः॥शुभाशुभकर्ममोलिकुनी॥
लवत्रं किनाटिनी॥यश्चभीर्कमानश्च सर्वालं कानेधुमिर्न द्वित्रयवर्षाकालश्चैत्रकवक्ष
द्वयविधुः॥संज्ञात्रयसिलयिरुनसिद्धाहं यद्युनायनः॥नमामन्कादिधागनपूर्वभागावनं

१३

॥॥॥गु॥माहवत्री॥॥॥रुद्रेणोसत्रकालसमयुरं॥पीगावन॥॥॥रुत्सर्वपिभुनवत्री॥रुनेअलः॥
पिगांवकांयत्रंरु॥॥॥रुयुवकांयनाजवत्री॥वायूव्य॥॥॥रुयभासावनं॥॥॥ममी॥॥॥नके॥॥॥व
त्रीसु॥॥॥गु॥॥॥यभासप्रसादूमिमावहं॥॥॥दयकि॥॥॥नगादयः॥॥॥चक॥॥॥दिनगी॥॥॥मिः॥॥॥प्रहिमेगी
पुविवर्कि॥॥॥आह॥॥॥हिमासन्नसहाव॥॥॥॥॥वि॥॥॥हिटमि॥॥॥सर्वसव॥॥॥हिगाव॥॥॥माहव॥॥॥मि॥॥॥माक
वृ
अवि॥॥॥अनु॥॥॥मी
ना
आ

नृणां विष्णुं दृष्टिं दृष्टुमाप्तादिगुणपन्नः ॥ माभाऊ दहसूदः स्वश्रुता ॐ ह ॐ श्री वविजहव ॥ यि
 भुनवन्मू ॥ कि सगुह वि सि हा दि अस् नृ सि क न सि यु व ॥ ॥ गार्ङ्ग नि म नु न क नि अ म ॥ अ
 ॐ ॐ ल अ अ ॥ ॥ ना ग व ॥ ॥ या व न म नु मूर व वि ॥ अ नि क ल न न व ॥ ॥ स
 न स हा व वि ॥ ॐ अ क न दि गु म न स म द धि ॥ ॥ ॐ श्री व ॥ ॥ स्व प्र ने व यी द ॥ ॥

१४

नीम
 इवमटिमीं उं ठिनः ॥ पूर्वक ॥ भो व नृ य न ध्या यं न संपूर्णोत्सव ॥ गनु ॥ धन व न क चा भा द व जी य
 का भ य नू ॥ नृ प ॥ धन व न क चा यूनः यी ना व न द न नू ॥ का म भा ति य भु न व जी नु ना यी ना व न
 स र्क द वा न का व न ग द का म यें द ग व जी क चा न का वा स न द न्या न ध्या मां मा य न यूनः ॥ ॐ
 श्री व जी ग नः का म्य क चा ध्या व न स र्क ॥ अ नृ प्रा ग व नु द द वी स द न स र्व म द ह ले ॥ स य नू

कां२

२२

नरुक्षसर्वानुकूल २ किलि २ महाविष्णुवत्तदुद्गुहं उगुवनिगनीग नरुक्षदुद्गुहं ॥ श्रीवत्स
 नैरुद्गुहं ॥ श्रीवत्स २ दुद्गुहं श्रीवत्सममं कर्त्तुं महावलसागं यत्समा नय, शांतां ॥ श्रीवत्स २ दुद्गुहं ॥
 मासु युतिद्वगवलस्यः ॥ तालयग्राहसहनमः स्वाहा ॥ द्वितीयमालामनु ॥ नमः सर्वसीयनिपूजक
 ल्यः सर्वगथागनल्यः सर्वगथागनल्यः श्रीवत्स २ दुद्गुहं ॥ श्रीवत्स २ दुद्गुहं ॥ श्रीवत्स २ दुद्गुहं ॥
 १८

द्वितीयमालामनु ॥ श्रीवत्स २ दुद्गुहं ॥ श्रीवत्स २ दुद्गुहं ॥ श्रीवत्स २ दुद्गुहं ॥ श्रीवत्स २ दुद्गुहं ॥
 २

५५

[illegible]

42

१२

[illegible]

रावमइ कयिरुनममयुयमहनिर्ण॥ कल्पयस्वस्त्रियंगवरुवयुयनविधेनिरर्न॥ गरुनेवामि
 मागुगप्रथेवस्त्रिगर्गवुर्गु॥ माननयिगर्गययिरुगिनिगर्गनिधिम॥ अन्नाथस्त्रिगर्गनीन्स
 ७१ वीर्द्धोन्विनीवृक्षनीमथ॥ वांछांस्त्रितीनटिंस्त्रेववर्गकीनूयर्जिविका॥ वृग्निनीपामिनीस्त्रेवमथ
 कायाविनीमूनः॥ अन्नाथान्नामथपार्ककीनूयहाससंस्त्रिग॥ स्त्रेवयस्त्रिविधाननयथपदान

नीर

20

ज्ञायन॥ रंद्गुर्कयभ्यहनुनामछाहकिसाधकं॥ अविटीन्यामयदुय्यलया॥ गरीमयन॥ न्ह
 लोकसवसिद्धिः यनलार्कयिगथेवव॥ गसाऊकयनककर्वीनीधेगयन॥ जाकिनीमन्त्रकगुगमथं
 यैवधुनीयधसाधनी॥ अत्यनकासिनीमर्थमयावूर्धनंदंभिर्ग॥ मनानूकलकेदेणसवयिद्रेवव
 र्जिगापुष्टिन्नग्रासमादायस्त्रेवमन्त्रमयाकासिनि॥ वृद्धाहंयायलः सिद्धिपुहायानमिनापुयाराव

राधिनं२

पतिंगुस्वस्वनृप ॥ गभरुहायनसासुधिः ॥ निर्जुनयाधर्मकत्वायधालुवान्वसु, कः ॥ रावयतिरिवं
 दार्यामन्यान्यद्वन्द्वयोगनः ॥ लिप्ययस्यद्वन्द्वः कत्वासमूखा वायव्यधर्म ॥ दार्यामन्यान्यनागभरु
 मन्ध्यामिच्छुप्रग ॥ नगदृष्टिसुखध्यामिच्छुदकाग्रमानसः ॥ नयानन्वेवकवीसूखाकरः कनेव ॥ २१
 त्वमयुगसिररुक्मि ॥ नमिध्यामिच्छुदकाग्रमानसः ॥ नवाहर्जननिराम्यरगिनीवयामनेयिका ॥ सफरिः पू

नृपेदासः त्वमेवैतत्सर्वकः त्वमेकयवकक्रीडः गवाहं स्वाभिनीमना ॥ यत्तु वृत्तनभीः नस्यातिरिचि
संपूटीरुनिः ॥ वदरुष्टेष्टुर्वाक्यं श्रुत्वा मरुः कत्रयनं ॥ त्वं भगं मानाधिगाराय त्वं भवताऽनमि
का ॥ रुतिनीयुष्टुशायित्वं स्वमात्वं २१ मात्मिका ॥ गवाहं सर्वदा दासभिव्यरुकिय नायनः ॥ य
स्यसीकृपयामानः ॥ स्तददृष्टिदिनिर्विकारः ॥ नमः सायनस्य ॥ सावन्वयित्वा मूर्धमूर्धः गदा
द

^कनिरुद्धमसकैवकुवकनसंमधू॥यस्योत्पलपुष्पसदृशंविभूषणं॥वक्रोवर्षेनिर्गन्तवाकवध
 नवीर्दयैदृध॥समूर्वगस्यसुखदृक्षसुखंप्रसाविगानम॥यदरुह्यदृष्टिवाक्करुह्यवेनावनसम
 यित्वाभ्यंशस्यजर्ममूर्तिं सयिगदासकीरवेन॥नवजंस्वामिनीवोदीमाना नाजकूनीत्ययि॥मदी
 प्रंयवननगकुसुमनवत्सनिनकनीमयासर्वदिग्गयस्मानुत्तमानद्यमयागमः॥कुरुक्षेत्रवरा
 म
 लपुत्र

२२

३२ वेव२

न३

वत्सदहिमवज्रसूरव॥गुदलंयकजंयभमध्यकिंरुकरुषिणी॥अहासुखावनीक्षगुनक
 विन्दूयल्लशिनी॥नार्तिनीसुखदीभर्तिसर्वकल्यविवर्तिनी॥मामूलाननस्योद्योगविद्वलमा
 नसी॥स्वध्यादयूजंदत्ताममाधर्द्धिनिनीक्षय॥सूनुद्वज्रकयद्रमध्यवध्युवसय॥दहिधय
 सहस्रत्वंलक्षकोटिमधवूदी॥मदीयंगुदलेयप्रसांसवर्किसमन्विता॥स्ववर्गनप्रप्रमिष्यसूरवे

भिः रुद्रपुत्रः प्रोवाय वायु स्वयं ममाना तानमनूरुनी ॥ वज्रस्याग्रनसं वृद्धं न कवन्धक संसं निः
 री ॥ धं वृष्टं निमिनिनां ध्यामं न द्विरुयै कथं न सा ॥ रावप रुर्जकी सोखी निष्ठया गमर विरुगः ॥
 नसं येयु एरुनं दद्या विद्वन म्बवं तीयुय म्हा ॥ यावत्सी ददगी नृपं दधमा ॥ ग्रं विविक्तया ॥ स्त्रीमका
 रुतनाखनै विरुगमी स सोखादा ग्रीणिवा ॥ विद्वखादिह निर्दयं कि म्भुख नाष्टु पाय कर्म विगाने
 रु

२३

न नेवदू नावगम हत न के नोद्र सदादूः खगी ॥ क्रन्दगा वदू वदू दध ववो सिष्ठ नि कल्यग्रयी ॥ किं वाय्य
 नृगुह स्त्री नी सर्व सत्त्वय निग्रहः ॥ कयाया प्रदिवा न द्वा स्त्री नां विरुपु मिष्ठिनी ॥ आसी ना वत्स
 रुनी यत्र रुन मपि यूष्मा गिरि क्षमा ॥ सा दैदवं नृपा ना म्भस्ति कया गिनाः ॥ आसा नु दर्शन ना म
 साः स्युष्टिष्टिष्टि वदू वनः ॥ प्रत्याः स न गमाष्टि ग न हर्ष ल र्ग न सुखं ॥ यथैव विवस्त्री नां दिव्य
 म२

संज्ञा

वि

न

नृपहासंकिनी ॥ गमूडादिनी कृत्यत्वां सूरवंधु उनिमानवाः ॥ गमूडा दोषोर्मूकसर्वसंगुहामकिनी ॥
 पूष्पपूष्पमहापूष्पप्रसादकूत्रु अन्तिके ॥ गमूडा गमूडां दृष्ट्वा उदकनयि उग्रम् ॥ कूर्वनुभी का
 कं नैयाजीगा ॥ कूर्पादिनजिनिका कूर्पासुरादयं वन्धुपुत्रे ॥ दानवान् ॥ वन्धुजानुग्रहयेत वन्ध्या
 यूपमदतः ॥ यादवानां वन्धुसुरादिवापिन ॥ वन्धुसमदमक ॥ वन्धुवन्धुसुरादिगुह
 वंधुव १ वंधु २ व २ रु

२४

कं ॥ प्रमतीत्रात्र वन्धुसुरादिकीन ॥ थैव कूर्मवन्धु ॥ सर्वगारुडभवत् ॥ गगुपय्य
 कम ॥ धनुस्त्रिपुष्प ॥ कूटकासनी ॥ कृत्वा वा द्रुपुगं स्व ॥ स्वस्य गगनयात्रये ॥ स्वस्य वा द्रुपुगं गम्याः
 कदामध्यादिनिर्गम ॥ यद्रुपुक्षिपवज्रनुरवाणा वन्धुसुरादयः ॥ द्रुपुहसुपुगं वीवर्द्धनीय
 यात्रये ॥ वीवर्द्धनीय ॥ द्रुपुहसुपुगं वीवर्द्धनीय ॥ द्रुपुहसुपुगं वीवर्द्धनीय ॥ द्रुपुहसुपुगं वीवर्द्धनीय
 त्यां

पृष्टं ॥ दाला वा लवंतक न न्या भंसा द्वध्वार्थं जानूकग्रहः ॥ गस्याः याद न लोखस्य वात्र मूलनिपात्रय
 न् ॥ सुखादय क न न्यासा द्वध्वार्थं वात्र मर्दनः गस्याः याद न लो ना लो हृदिया ध्वं द्वयं विदि ॥ दाना
 वा न नेंक यो न न्यासा द्वध्वार्थं याद वा लेनः ॥ गस्या मूल द्वयं पुं मं मो सी स्याय को उका टन ॥ सुखा
 दय क न न्यासा द्वध्वार्थं रु नि वा विनः गाम् रु हू की न स स्याय द्वि या द अ प्र सा न य न् ॥ वधः स

२५

ग२

मद नु को रु यः ॥ प्रथे क य वि सा न य न गस्याः याद य गं व कृ क त्वा वा म प्र सा द य न् ॥ सि मे वं चं स म
 द कं कं कं रुं यः प्र स थि वि स म् स र्व वा यि हृ दा पृ ष्ठि म् अ रु नः ॥ ह स्ता दि म र्दनं क र्मा व ध्वार्थं वि
 रुं रुं रुं रुं कः ॥ यूनः सुखादयं क त्वा गाम् रु न न पा न य न् ॥ स यो न व क न ने व व र्ज य प्र नि व र्ज य न् ॥
 न स्या ज्ञा नू ग ल गु ल्य के रु ध्वं नि पा त्र य न् ॥ अ न्या न्य वे नि ह स्ते व प्र म नि जाल मि नि रु नी ॥ ग स्याः ६

नमः सद्ययदंस्त्वधे वासं सद्यो नमः ॥ उर्ध्वपादा सुयं वन्द्यो संसरोदुःखनामनः ॥ नमः पादगले
 पादपूरीदत्वा स्वस्वस्थाय निनिर्नि ॥ यन्मन्त्रो ह्ययं वन्द्यः यन्मन्त्रो ह्ययं वन्द्यः ॥ नमः वासयदं स्त्वधे
 सर्वा वासा नमः ॥ नमः वन्द्यः सद्यो निनिर्नि ॥ वाद्व्यापी उग्रजन्म के सर्ववन्द्य उदाहृतः ॥ ६
 नमः पादगले नेत्रकर्णसूत्रिनिर्नि ॥ वन्द्यो सर्वगोपः सर्वकामसुखप्रदः ॥ त्रिगुणस्य २६
 नमः वन्द्यो सर्वविधिगुण ॥ श्री उग्रजन्म उग्रजन्म उग्रजन्म ॥ वन्द्यो सर्वगोपः ॥ वन्द्यो सर्वगोपः ॥
 २३

नमः पाददिर्घयुनः युनः ॥ उग्रजन्म वन्द्यो वन्द्यो वन्द्यो ॥ त्रिधा २४ वन्द्यो वन्द्यो
 यिवे नमः नमः ॥ रुद्राय वन्द्यो वन्द्यो वन्द्यो ॥ यिवे नमः नमः ॥ त्रिधा २४ वन्द्यो वन्द्यो
 वन्द्यो वन्द्यो ॥ त्रिधा २४ वन्द्यो वन्द्यो ॥ वन्द्यो वन्द्यो ॥ वन्द्यो वन्द्यो ॥ वन्द्यो वन्द्यो ॥
 रुद्राय नमः ॥ मस्तु नमः ॥ गलकर्णयार्क कसं कनं रुद्र ॥ वन्द्यो वन्द्यो ॥ वन्द्यो वन्द्यो ॥
 २२

सिद्धिः॥मदधित्यादिनयव वृषधेदं॥प्ररुगः॥स्वप्नप्ररुगानिर्वाकृत्वाचुचयत्सदयवादनः॥अनु
वाहंसिगः॥यर्थं॥सृत्वा॥सृत्वा॥सूक्ष्मर्द्धः॥हस्तेनस्य॥प्रित्यर्वायुसन्दनसिद्धं॥कृतन॥विश्व
वृम्भनरवकृत्य॥धनिष्कृत्वा॥दिना॥द्यात्वागन्ध॥अनद्व॥ध॥धयेदुसनयासिद्धिः॥
प्रविशदमथनननिः॥सुगु॥या॥नेकमः॥वेदरु॥गृदृणवाक्ययन्तायनासिकाजइः॥अ

२७

न

च२ न

प्रप्रवरवज्रनः॥यन्ता॥रवदसानयागनः॥वेतुनायगसिद्धिसुरवेदानययागनः॥गनः॥यदग
गस्तिदंनकीवापुरवसो॥कन॥॥रुद्रप्रद्युमूर्धनस्याः॥संयध॥वृत्तः॥यूनः॥सनरव॥यानूकं॥कृत्वा
मदधित्यासवत्यदी॥मसकके॥प्रसवदद्या॥कुत्त॥धलधूमृष्टिक॥गनभित्तोत्यन्व॥कृत्वा॥द्योगी
समादिनः॥००॥कृत्वा॥धयकी॥गुदद्या॥सोरवो॥कमानसः॥प्रथ॥कृत्वा॥पुष्प॥न॥वा॥स॥ने॥सोरवो॥क

लु नार्थग्य

मानसः॥ शनिन वा निहंत्य प्रीतान् याद प्रयत्नः॥ राक्षस्य दग्धं गंगं भुक्त्वा निवापि त्रिदश्या॥ ना
 सयानलिकाया गतिरित्येव सामर्थ्यं वृद्धये॥ प्रक्षाल्य त्रिदश्या यदी प्रक्षाल्य यन्मयम्॥ श्री गौरी कृत्य
 गतः यथा हस्तस्य समीपे॥ यिव हस्तस्य मर्मावायूनः कामयुव वृद्धये॥ भूमि जीर्णं गनं यथा
 दिक्षु मा सुसूत्रादिभिः॥ यतः पूर्व क्रमैव वृद्धये नान्य मा नरो गू॥ शूनना सास मा जान साधिगं

२८

गौ

वमहा सुखी॥ वक्तुं नायक पदं धरुं यन्मन्यते वया गंगं विनू॥ नागिं धीं सिद्धिदानार्थमया प्रागः पु
 काभिगः॥ सव्यर्था यानि कथाय नाम रूपा गुली लया॥ ख्याभाय सत्त्वयर्था कः सर्वकाम सुख प्र
 दः॥ यप्रयर्था कमावा ध्व नाम रूपा रूपा यर्था प्रनू॥ लीलया सव्यर्था कवत्तयर्था कः सुखः॥
 रुपायानले कथाय समीपं मुखदीर्घक॥ सर्वकाम प्रदं यव गदूकी त्कुटू काभनी॥ रुपायानले

८

मर्त्य २

वरुणीर्षक
 स्थाप्य समस्तैर्मुखैर्दीर्घक ॥ सर्वकामप्रदं वैवर्ण्यं दीर्घक ॥ सर्वकामप्रदं वैव ॥ अर्द्धवत्
 सनीक्ष्य भक्तकामसूखप्रदं ॥ गिर्यग्रान्तरं गुरुमोक्षलक्ष्मणं ॥ कृत्वा धनं सत्तैर्वैव
 दिव्यकामसूखप्रदं ॥ सर्वयज्ञमथावर्ज्यं कृत्वा मित्रकल्यणं ॥ उक्तुर्द्वयार्द्धवत् अथवा
 सनमिदं मन्त्रं ॥ अर्द्धवत् सनासीनासि प्रकृत्वा निवर्तनं ॥ यमिवाहं लिख्यमग्नौ द्रुक् स
 धि

२२

अथ सर्व ॥ यन्त्रः सर्ववर्णकः कृत्वा भक्तान् कदमुदाकृत ॥ यान्त्रित्वा गुणं गत्याः सलिले न्ना स्यात्
 यित ॥ नदूत्यन्तं सर्वं आयुषं धनीषण्णधामनः ॥ ननामूकी हवशागी सर्वसंकल्पवर्जितः ॥
 विनागनदिनं विरुं कृत्वा माग्रायु काममेतू ॥ अन्तर्नागप्रायणयुधं विनागदधमायन ॥ नवि
 नागस्यत्र वार्यनयुधं सूरवतः वनं ॥ ननभ्यकाममेतू ॥ सोऽथ विरुं कृत्वा समादिनं ॥ अथराग

वनीयुमदिनदुदयारगवर्गनमस्तुत्याहिवन्द्येवमाह॥

साधनायायाः नमो नमो मयिवा॥

॥रुगवानाह॥

नाः॥देवास्तुतननागमस्तुतिसिद्धाकिमसाधकाः॥अथैवभूवोमहभवादधादेवाजोनीलक्री
सवीत्रेत्यादिदत्तमीगृहंहीत्वा रावप्रिनुमानदुः॥अथगमूकहीसर्वमदवमदवैत्रममूक

नर

धूमि

रुर्कवतुनायवपदपाकाविबनकिमहीनले॥गुप्तमहभवावज्जकिवत्विनसिद्धः॥वासुदवाह
वज्जनानायवत्वेनदवन्द्यावज्जयाहित्वेनकामदेवावज्जीगत्वेन॥प्रवीयुमूखागंजनदीवालूकाह
समादवपूनाःसिद्धाः॥यैवभकामगुह्यमभगाःसर्वसत्त्वार्थकावकाः॥नानामूर्तिधनाःसर्वरुणा
मायाविभाजिनाःनाः॥प्रथम्यकाहवीयपीयंकदावेर्नलियना॥गथनागनप्रहृणालियननव

द्विधा शोभति या जगति स सिद्धिनि ॥ शरीरं वा यदि ब्रह्मं वा हृदी सर्वं येन कल्ययन् ॥ कार्या कार्यान्तं यथा गम्यते
 गम्यते येन वा गविनू ॥ नयुष्मन् नव वायाय स्वर्गभा दान कल्ययन् ॥ सहजानन्दे कर्म हर्षि सुमिष्टे श्री जी समा
 हीनः ॥ नृवीथी या गम्यते गम्या जी यदि स्याद्भावनायने ॥ बहु नाथे कथा ज्ञानमदाहं कान्धं न कथा ॥ नृ
 वेदि बुद्धिदिगन्तं हन्यामदि पायेन लिखन् ॥ नस्मादर्व विध नार्थ ॥ रावयत्तु नाथर्ण ॥ येनेव न
 य

३२

५२

३

नृवीथी या गम्यते गम्या जी यदि स्याद्भावनायने ॥ बहु नाथे कथा ज्ञानमदाहं कान्धं न कथा ॥ नृ
 वेदि बुद्धिदिगन्तं हन्यामदि पायेन लिखन् ॥ नस्मादर्व विध नार्थ ॥ रावयत्तु नाथर्ण ॥ येनेव न
 य

सुख २

३१

व२

प२

मं॥ यदि वृत्तममं हन्यासा विपायेन लिख्यते॥ मदीयं त्रयं कौंसा धाम मता कौ (धेक) ठेगता॥ मात्रयस्मत्स्य
पक्षी॥ अग्निनी चेति चम॥ निर्द्वयं जला कृद्धो मां मान दमार्थं धिक्काः॥ स्थिः पूर्वादिपायनगतामर्थ
प्रकाशितं॥ ॥ वृत्तक लुवी नश्ये वलु मता यदा गनु ददप्री भनयटलः सफमः॥ ७ ॥ अथ
रगवान् रगवनीयश्च मधु लेन मस्कृत्याह॥ ॥ तदीयं पाणिना त्रयं हारं वीरु कथं प्रिय॥

३२

६ वी२

रगवनीया नाधिमा कनया गिनी वार विप्रमि॥ ॥ अथ रगवत्याह॥ ॥ यावद्विदुश्च नट
लाकं ह्येनैय पुवनवप्र॥ ममदीयं मग्नं त्रयं नीयानी व कूलं गर्ग॥ दवी वासने र्ये वप्रक्षीनी ना
क्षसी मथा॥ नागिनी र्गमिनी कन्या कि ननी मोनूषी मथा॥ गन्धर्वी नानकी येव गिर्य क कन्या थ प्रमि
का॥ व्राह्मणी क्षत्रिणी वैश्य ॥ द्राया ह्येन विस्तृता॥ कायसी नात्र यूगी वभिधिनी केल उरुनी ध

३१

३२ हृदिनी

३३

वशिष्ठिनी वात्रिणी वेध्यां उत्रिणी कर्मकालिणी ॥ कूत्रिणी शम्बीया दुर्ली भवत्रिणी तथा ॥ ८५ ॥
 विनी सोमिनी गद्यु वात्रिणी कर्मकात्रिणी ॥ नायिनी नटिनी कुन्त कात्रिणी स्वर्णकात्रिणी ॥ केव
 र्णी खटकी कुन्त कात्रिणी वायिनालिनी ॥ कायालिनी भस्विनी येव वत्रिणी च कुन्तलिनी ॥ ८६ ॥
 लीकुं कात्री च कांविनी यशिलाकूटी ॥ थयानिनी सैकं कात्री च सर्वज्ञाणी समा वृणा ॥ माना यशगि

३४

३५

३६

३७

नीरग्यामाभिकाशगनयिनी ॥ ३८ ॥ इकायस्वसा येव श्रुत्या च सर्वज्ञात्रिणी ॥ बुनिनी प्रागिनी येव ॥ या
 ॥ वायिनायस्विनी ॥ ३९ ॥ आदिवदवः सर्वाः स्मिन्नामद्वयसंगताः ॥ स्मिन्नायेव सर्वसत्त्वार्थस्वस्वत्रय
 गानिष्ठिनाः ॥ नासा भवयथा लक्ष्मीं यन्त्रनालिंगनादिदिः ॥ कुर्यात्प्रसमाप्राप्तश्रीतिनी रानिसेवि
 विनाः ॥ सविनास्तु स्मिन्नामद्वयसंगताः ॥ ददन्ति दामाष्ट्रान्गन्मात्सीसवप्रसिद्धि ॥

सिद्धः स्वर्गः सिद्धा धर्मः सिद्धः नवधर्मं मथं यः ॥ सिद्धा वृद्धः सिद्धः सीधः ॥ यज्ञाया नमिना सिद्धः ॥ य
 श्ववर्धु यशु दन कस्त्यना रिन्न नामनः ॥ नीलवर्धु नुमाना नी द्वेषवर्ती नि कीर्तिना ॥ ७५ न जने नौ नुमा
 नानी भा सवर्ती हि सामगा ॥ यीगवर्धु नुमाना नी सादवी यिभु नवजिका ॥ न कृ ७५ न नुमाना नी नागव
 कीयकी र्तिना ॥ ७५ न वर्धु नुमाना नी ७५ न वर्ती नि कथन ॥ नर्वेकरागवनी यज्ञाय श्रूयदा संसि

३५

सप्तः ३

ना ॥ यज्ञाय धूयदि शिर्वद्राय द्रगधौ ग ७५ न ॥ संराय ननमस्काने ॥ संयूटी जलिधन ७५ न ॥ दधने ८
 स्य भर्ति ७५ न यि सन ७५ न द्वयः ॥ यन्वना लिंगने निर्णय पूजय द्रुमा गि नी ॥ ७५ न को का धन करुवम
 ७५ न को वा कवे नसा ॥ नना संयूजिना नुष्टा सो सायसि द्विददामिव ॥ सर्वस्त्री दह नूय नु ल्य को ना नारा
 वाम्यदी ॥ स्य क्ता स्त्री पूजनं नाम दीर्घं स्य त्रपूजनं ॥ अनेना नाधनी नार्ह नुष्टा साधक सिद्धय ॥ सर्व

नीर का

वसुवदनिर्लस्यदृष्टिर्धुयर्थगता ॥ मदीयाऽप्यत्रयहाध्यात्वास्वर्गोऽस्मिन्प्रभू ॥ वज्रयवाप्रमाणागुरुः
 स्याद्द्विधाधिदायिनी ॥ नस्मात्सर्वयुक्तानेष्टसमानाऽधनगत्यतः ॥ योनैर्मयिप्रदाकर्मादिवाप्राप्तमानदी
 ॥ तदद्वाथमृषावाक्कुरु ॐ ॥ प्रत्युनिमादिकी ॥ श्रीचिकीरुसायद्वार्थस्तोत्रिकीयनद्रवाकी ॥ नयायैलि
 यममागीसमानाधनगत्यतः ॥ नखनवूत्रयद्रूकावस्तुलामयिमानप्रभू ॥ अन्ननेवयुष्माश

३६

का

दौर्मासमानाधयद्रुमि ॥ नकूर्याचरामीयायनार्नदोनुदूर्गमो ॥ रुयंकूर्यानुलाकस्यमावगुहाकि
 नलखग ॥ नयायनविग्रनकिश्चित्तयूधकिश्चिदस्तिहि ॥ लोकातीविरुनसायेयाययूध
 व्यावस्तिगः ॥ यिरुमाग्र्यमः सर्वसहस्राग्र्यगस्तिमिः ॥ नवकीगचनकाशोकोशोस्वर्गयुमा
 मिहि ॥ यथेवमकिनामृषीस्वर्गकल्पविप्रपुरी ॥ विषारावायिसंयानिगथस्वर्गमध्यागमि ॥ ८

प्रवर्तयन्निज्ञानानिर्वाहयन्वद्वेः॥निर्वाहीभूयन्त्यनुप्रदीयस्यववाग्नः॥मरुदेवयज्ज
 सोयिनवाधियदमभूत्॥मस्मात्सर्वयत्रित्यत्रमामेवात्राधयद्वती॥ददामिज्ञानमात्रं बहुसि
 द्धिनर्त्तसीमाप्रः॥अथरागवाक्यगवनीयुक्तायात्रमिनामाह॥ ॥किमाकाशोवत्तुसुखसि
 द्धिर्मुक्तीहमी॥ ॥अथरावत्याह॥ ॥यथैवर्तुपुरंदनयात्रिनायाःपुकीर्तिनाः॥नासीयत्तु

२७

स्वर्णः॥यथैवर्तुपुरंदनः॥वत्सुभ्यसर्वप्रवेगयात्रिनायामुमंभादिनाः॥नीलवर्तुनुप्रारर्ण
 सवनीलावलःसुतः॥॥॥गजेभादिप्रारर्णसुतवतावलसीरुकाः॥पीनवर्तुदिप्रारर्णसखाध
 नःपीकावल॥नकरुमेनादिप्रारर्णसुतकावलउदाहृतः॥॥॥वर्तुदिप्रारर्णसखाधः॥॥म
 कावलः॥नकनकरवत्तुःयंयनूयनसीरुगः॥नृष्यवत्तुसमाख्यामाहस्यसिद्धिहरत्वनः॥याव

३

दाभयम्यनंदिवनूपयदासंलिमिः॥ बहुसिद्धिर्मथेवाकानथवह्नीयुसिद्धिनि॥ ॥ पूर्यकनूनी
 मारवाभीयं तुमहाभाषणं न केत्वनूपयटलासुमः॥ ८ ॥ प्रथमगवस्थाद॥ ॥ कथंराग
 वन्युहायापयानदीना नोरावनीयः॥ ॥ रागवानाह॥ ॥ श्रीगीसीमग्रमः कृत्वा प्रन्यामदृष्टि
 नत्यनः॥ अश्रुकार्यसमा दायध्यायदकाग्रमानसः॥ अगुक्तायस्वररावत्वा रुदामास्मिनागपि॥ विना

३८

वार्धयूनरंदः संप्रक्षायाम्प्राप्तः॥ मत्पूजयायानधर्मः शीरागस्त्वकनारवः॥ निर्माहाय ऊननूपयको
 कामरागमहास्वर॥ अगुक्तायस्वररावर्णयूनूपसुगुणिधगुके॥ अगुक्तायस्वररावावस्त्रीनूपानुगुणिध
 गुके॥ यमानवरवे वृद्धभ्यगुक्तायस्वररावः॥ युहायानमिनास्त्रीयसर्वदिक्षु व्यवलिताः॥ मत्तेहमाह
 महंकारं कर्म्यसिद्धिं प्रदयूनः॥ बहुनीषदास्वनूपनेत्रिननूपदासंलिमः॥ सिद्धात्मकाभिनी

वक्ष्ये नृपमाध्यापय सर्वगः॥ सादरं रावयदित् दीर्घकालं तु तत्त्वविन्॥ सर्वकर्मप्रतिलयकृत् वामासर्वकर्म
 स्यः॥ गिरिसेख्येकविरुनयावत्सिद्धिर्नलस्यन॥ सिद्धिं कृत्वा यदा प्राप्तिं स्वर्गं प्राप्तिं द्यौं रावन्॥ द्वाभ्यां
 नेवलाके सुवायु विरुं विरुं शिगः॥ सर्वसु॥ सर्वज्जवापी सर्वकृष्णविवर्जितः॥ नयाग्नानज्जनस्य
 मरुसुस्यनविद्यन॥ विषन्तक्रमनगस्यनज्जलनायियावक्तः॥ नभसं भग्नसं द्यासुसं रावन्तिकदा

३८

यन॥ मनःकांक्षितमागुहा सर्वकामसमूहवः॥ गत्वा हीरं गिरिवायत्नेभिः कामदिसमूहवन्॥ लोकाध
 गुससिष्यप्रग्रयणेवसीस्मिन्॥ नस्यनगुविमानानिज्ञापकं सर्वकामिनेः॥ नस्यदिव्यसिद्धिप्राप्त्या नृप
 योवनमस्तिगः॥ इति विष्णुनिनसंदहायावक्तः स्वर्गगात्रका॥ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरकानैगदयः
 सुताः॥ किंकनारुग्निसर्वव्याधिनश्चरुमिहिन॥ प्रथेव प्राप्तिनः सिद्धिप्राप्तिन्यासुनयेवहि

॥ नवावज्जना काना प्रायिना वज्जना विगहा ॥ अथरागवत्याह ॥ ॥ कथंरागवन् दहं प्रह्लापायमा
 णहासुरवमहदूत्यग्रगे ॥ ॥ रागवानाह ॥ ॥ ललेयुहा स्वरावेन वाभना जीपुकीरिगा ॥ न
 सना वायाय नूयहा दक्षि (हासमवलिगा ॥ ललना नसनमा मर्मध्व प्रवधूर्निधिवलिगा ॥ ॥ प्रवधूर्नि
 यदावायः ॥ ३ ॥ कृहासमनसीकनः ॥ ॥ मित्र ४ सन्ध ॥ यमवज्जना (ध्वहासुीरामां कने ॥ ॥ प्रह्लापायमायमा

६०

गम्युहालीनारिहीछिगा ॥ दीपवज्जलनगन डाव्यग ॥ ॥ कर्मरुमी ॥ ॥ ननेवा त्यग्रमशो रयीस्वलीस्वली
 प्रयागनः ॥ ॥ नमहद्वमहायागरु ववसु स्वरावगः ॥ ॥ नमरवीयेन वद्ध स्यानिधमयासयागनः ॥ ॥ स
 श्रीमान् वहुनाय ॥ ॥ दक्षि नैवदिउमनि ॥ ॥ ॥ गुरीक लीवी नारयणी वहुमता नायगनर्क
 ध्यानपटलानवमः ॥ २ ॥ ॥ अथरागवत्याह ॥ ॥ कथंरागवन् स्त्रीयमिनि केनायिभकन

३१
 साधयिगुं वलुमहाययदं ^३हो नमः ॥ ॥ राजवानाह ॥ ॥ नमः कनकद्वी ॥ ॥
 राजवस्याह ॥ ॥ किं राजवतसुखं नैदमा नमः ॥ ॥ राजवानाह ॥ न सुखो दयमा ग्रेहा-
 लयन वाधि गुरुमोमा ॥ ॥ सुखविषयो दयादव प्राप्य न सावतान्यथा ॥ न च कार्यं नित्यं नैव कान ६
 धो नैव ज्ञायन ॥ कान ६ ॥ गुणानां न यान्याहिकदावन ॥ सर्वा सा मवमायानी स्त्री सा मेव प्रम

४९

३२

३२
 मं २
 स्यन ॥ गामवागि कभमसो नसाईसाधि वृंगगुणि ॥ न सान्न स्त्री विद्या ॥ यं कर्तुं वासु कदावन ॥
 प्रवीयदिरुवेदुः खं मयू र्वा वन्धनैरुयं ॥ स हि कस्तव मेव दीप्ती नैव नु सीत्युग ॥ यस्मादेव
 सिप्रः सर्वाः सुखे वृद्धत्वप्रापिकाः ॥ निर्वृत्ता यथा ॥ लाधुष्टानिर्वाकामयनायन ॥ ॥ सिद्धिमेना
 ददनयेव सर्वरावन सविना ॥ स्त्री धर्म नूयनु किं वायं मिपन वापि प्रम ॥ ॥ यन नवविषा ॥ गन ८

३

किं वक्तव्यमनःपत्रं ॥ नस्मात्सर्वाः सिद्धिमादव्यः सर्वथेव प्रकल्प्यन्तु ॥ मनसः कल्पिगण्यपि कावृषां
 पाषाणकादिदिशि ॥ स्त्रीणां ये वयमादेवी देवता स्त्री न तस्य हि ॥ अन्यथा न्येयं रावत्पूजा वक्तव्यप्रपञ्चा
 गमः ॥ न यान्येयं पूजं दं प्रदेवता द्विष्टां मयि स्वर्ग्यं ॥ नस्मात्प्राणी कृपा विश्वामणु लीकल्पमग्रमः ॥ ४
 पव्यं मिथं न गृह्णाया ॥ न भूमिना कर्मिषु व्योमस्थं च प्रनिर्णय दीय धूपादिदिशि स्तुभा ॥ यथा ह्युर्व

४२

न २

तथा २

दना कर्म्यस्त्यक्ते मण्डलमागमः ॥ न नष्टं न गः प्रदक्षिणा कर्म्यं च ह्येता कृता रावन्तु ॥ स्त्रीपूजये
 चैव नूयसादनीर किंच न स ॥ कर्म्यं दर्वं विष्मं पूजामन्या न्यं वा कं जिने म्यन् ॥ निन्दये च स्त्रि
 यन्नेव प्राथिनय विद्वन्ने च ॥ वक्तव्यं मधूर्नवाच्यं दातव्यं वा नूयनः ॥ वन्दये प्रसर्वरावतम
 भाद्रशानवृध्मन ॥ एते नैव मिथं कायिष्यु त्वेदं वृद्धरा विमं ॥ अन्यथा त्वं कं नैव सत्सवा यी न

न कस्य नूनं ॥ मन्त्रमयं न्यायं सिद्धिं स्त्रीविधाऽनर्किकम् ॥ नयसा सिद्धिर्नैव ननु नायसा धनं
 निरुल्लंभात् नाना वाधनिर्मलमनः ॥ कामं नव रुपेत्कामी मिथ्या जीवसु ज्ञायते ॥ मि
 थ्यं नो ध्याया जीवनात्प्राप्य पापसु न न कर्माणि ॥ लक्षणं १ न न कालं नु मिथ्या जीवी न संशयः ॥
 अग्नौ न वसाधनं सिद्धिः कामं नैव किं नान्तरं ॥ यद्येव कामं सत्यं सदा नयसा नाना नदी नदी

पृ३

॥ नृपयः प्रथमः सर्वं भूमा च द्रुमवत् ॥ गन्धस्य त्रिचुर्ध्वं कृष्णं रुद्रं सप्तमं ॥ स्वर्गस्य स्वर्गं नि
कृष्णं त्वं च कामा वैश्वर्यं ॥ रत्नं गन्धं त्रिचुर्ध्वं कृष्णं रुद्रं सप्तमं ॥ नागः पर्वतः
च नानास्ति नवभासाः पर्वतः ॥ माने च यो वनं सर्वं स्त्रीसूर्यं मायराजिनं ॥ निष्कूलं यापिष्ट
धर्मे व्ययं कृत्वा महरुर्न ॥ शिवनिः कामिनी नित्यं काममाश्रयनाय ॥ यत्तु नापद्यददृष्टाः

याविद्यानिसमाभिर्गुणैः॥ एतद्वायानिकथंनिर्दिष्टांरुनीहास्यभवत्॥ लोककोकृत्यनामार्थमाद्या
 दवीसुगंधसूची॥ वरुणमीनिसहस्रादिरुक्तायानः॥ पूर्वपूनः॥ गत्वानिर्जनामीनवृद्ध
 इतिद्विपुकाशक॥ यागामानानिनाकृत्यनयेवंप्रमार्थन॥ यस्मादक॥ पूर्ववृद्धः॥ सिद्धा॥ अया
 चिनः॥ सुखी॥ वरुणप्रसमायागत्सुसुखंलखनेयन॥ सुखेनप्राप्यनेकाधि॥ सुखेनमी॥ ६

५५

विभागन॥ विभागः॥ कुप्रमप्रसुलोककोकृत्यहानय॥ प्रनयनेवर्गलोकायानिकवृद्धवि
 भयमी॥ ननननेवप्रय॥ माहंपादवीनृत्यनंजिन॥ सर्वशराशिधर्मिकत्वानिन्दकृपाधिनी
 ॥ नानादिभिः॥ क्षापदंरायैरु॥ अयनरायमा॥ निर्विददभं॥ प्रव्यापिर्वयस्व॥ अविनाभनः॥ शु
 थरुगव॥ नीपुक्षायानमिगामाह॥ ॥ कोरुगवन्मायादवीसुगंधः॥ काव॥ अया॥ ॥

रंगवानाह॥ ॥मायोंमादवीसूनुअहंइनुआवगनीगन॥॥चमवरंगंवैरुगवानी॥अयाप्रु
 लायनमिनामिका॥मावनूपसुसिप्रःसर्वत्तदूपहोवनामना॥मदूप॥घोवपूससुसर्वनुव
 युकीर्हिना॥॥द्विधरुवगन॥॥वेगनत्यसुयायासुजगनु॥ ॥अथरुगवनिहि॥ ॥क
 भंरुगवनूपभवकादयाहिस्त्रिपदूपयनि॥ ॥रंगवानाह॥ ॥कामधनुस्त्रिनाःसर्व

क२

४५

खानाप्रंथवकादयः॥मासमार्गन्नज्ञानकिस्त्रिपयथकिस्त्रिदा॥संनिधानरुवयनुदुल्लरंकी
 कुमादिकी॥नगगार्थसमाधुनिदूनसस्यमतार्थना॥अनाप्रज्ञानयागनप्रज्ञाहीनासुमार्जनाः
 ॥विदुन्नकूर्चननत्तमयायेनत्यु॥अयिनी॥नथयगुकलोकोलेकीटिमध्यर्थकथंन॥न
 केकःसंखानसत्वाप्रुद्रामत्तयनायदः॥नया॥र्थगविनीसर्वणीद्युवायुसिद्वये॥ ॥

मत्तं

धि

स्यचि२

ॐ ऐं क ह्रीं श्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ महा गायत्री नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दण्डमः ॥
त्याह ॥ ॥ किं त्वं रगवतु सना ॥ गतिवीनना ॥ गवा ॥ ॥ रगवानाह ॥
बायी वसर्व कृत्स्न सर्व नाशकः ॥ सर्वत्रय धनो वृद्धः ॥ रुक्मि कर्ण प्रभुः ॥ सखी ॥ यनयने वनूपे ॥
सत्वायामि विनयनी ॥ न नमने वनूपे धरिणी ॥ हं लोकह नव ॥ कवि द्रु द्र कवि सिद्धिः ॥ कवि

१० ॥ अरुगवा
॥ सर्वे हि सर्वव्यां
४५

महं
इन्द्रोऽर्थसंयकः ॥ कवित्येनः कविरिर्मकु कविनात्रक नूपकं ॥ कवि द्वा सुत्रये व कवि सा
नूप नूपकः ॥ कवि स्थावन नूपो ही विभ्य नूपी नरी भयः ॥ अहं श्रीयू नूप अयिन पीसक नूपं
कवि न ॥ कवि जोगि कवि द्वा कवि न्मा ही भुविः कवि न ॥ कवि द्वा भुवि नूपो ही कवि रु ६
नूप धर्म सिनः ॥ मदीयं दृष्टं कविरु मन्या के वि न वि शन ॥ वसुव सु प्ररुदा हं ज न्या हं ज

नकोऽपि हि ॥ विद्यादं वाय विद्यादं सिद्धि नृपहासीति न ॥ अहं ज्ञानि न हं मत्पुत्र हं वाधि ज ६
 नाद्यहं ॥ अहं पूषमहं पार्यगनः कर्मरुल त्वहं ॥ अगच्छ मयं सर्वमिदं नृपम मेव ॥ सा
 गयी सम त्रसा का त्रेयी गिना न त्वयि नृपा ॥ ॥ अथ रगवत्या ह ॥ ॥ किं रगवन्तव
 वेदं नृप ॥ ॥ रगवा दना ह ॥ ॥ न वा यती विधि नृप पथ सर्वमिदं त्वयि न ॥ त्वया वा क क ६

४७

मिदं सर्वं रगवत्या व न ॥ ॥ अथ रगवत्या ह ॥ ॥ मन्त्राणां साधनं कृत्वा नृपानि कीर्तयति कृत्वा
 नृकादममः ॥ ११ ॥ अथ रगवत्या ह ॥ ॥ मन्त्राणां साधनं कृत्वा नृपानि कीर्तयति कृत्वा
 नृकादममः ॥ ११ ॥ अथ रगवत्या ह ॥ ॥ मन्त्राणां साधनं कृत्वा नृपानि कीर्तयति कृत्वा
 नृकादममः ॥ ११ ॥ अथ रगवत्या ह ॥ ॥ मन्त्राणां साधनं कृत्वा नृपानि कीर्तयति कृत्वा

धनी॥सामर्थ्यमनकविज्ञाननिष्ठमवदप्रश॥ ॥अथरागवर्णन॥ ॥यद्युनीयसमाधि
 श्चामनुसाधनमाननशून॥यथर्मसाधयसार्द्धद॥वर्णनमकीदृद॥मूलमनुमिगिरयाननसर्वमनु
 प्रसाधक॥लिरिवनीमिषूतप्रगुनगुत्वसिहवेत्यूनः॥धनप्रवायप्रसुनस्यपार्षसमूलिग॥ ४२
 स्मनगुदवाह्यमनुस्यमानाप्रकिदि॥अदमः॥नस्मात्सर्वप्रपत्तिनमनुमनस्यसाधयनू॥

३२
 अथमसिनसर्वरूपप्रगुनवाउमसकृष्णमहात्रगदयादूहसत्वांप्रयनाधिनाः॥सर्व
 व्याधयाहीनाःसर्वविग्रहादयादप्रक॥मनुत्रस्मियुगावगः॥सर्वाभ्यसिद्ध्याअरिसूखी
 रूपाः॥अथसाधनशवनि॥लक्ष्मीजयत्यूर्वसेवाकनारवग॥ननःककुपुमियेयदमान
 स्यपुनिदिनीगुंमंसंधीजयप्रावत्यूर्हसासंगिनाः॥सकलानागिजयसहनीपूजाकला॥

संक्षानः पुरा तियात्सूर्यार्थदयं ॥ गगनार्थमनुः सिद्धारुवनिगनः पुरा तिसर्वकर्मादिकनानि ॥
 अथरगवनः साधनरुवनिपट्ठगवनं लिखायप्रगु पूर्ववच्चतुर्धमलमध्वदणसकं
 यथाधिमाक्षनः ॥ गस्यागः कृष्णपुनियदमानरागिर्हं ध्वसहस्रमकैकं जयन् ॥ गगनकेयूहिना
 स्थापयथाविश्वनः यूर्जकत्वासीध्वकालात्पुरा तिसूर्यार्थदयं यावन् ॥ गगनार्यान्यस्यद्रुनरुनव्यं

त्वनिर्गत्वनिर्गजयन् ॥ गगनरागवान्स्वयमेवागच्छन्निर्गगनार्धकस्यपादपादत्वायनितास्थानव्य
॥ ॥ गगनरागवानाह ॥ ॥ रगनर्किंवनन्ददामिनि ॥ साधकनवकव्यवृद्धत्वमिदहीनि
॥ गगनरागवान्स्वयनीत्रयविष्णुनिायविष्णुमागृह्णित्ववृत्तवर्षकृतिः ॥ वउशिरुक्तमुपादयन् ॥ ॥
॥ यथादिव्यविमानवानी ॥ भगवत्सहस्राक्षत्रागधमहिमः ॥ कामनूयीसर्वज्ञ ॥ रगवन् ॥ ॥ ॥

रुवेति

रुवनि॥ अथवास्व ऊं ऊनयादू कागुठि कायादलेयनास्त्र कासरागेभ्यर्थाविद्या धनकवित्वं पां
 पाहिल्यं प्रक्षयक्षणीनसस्यर्धधनुवादिर्कप्रथमि मर्गप्रार्थयेत् सर्वसंगवान्ददामि॥ अ
 थवायटं नृकल्वीर्जलिखाययि त्वापूर्ववत्साधयेत्॥ अथैकल्वीत्रयटं कल्वयनादिव
 यक्रालिगिर्जः॥ ८७८ नायनामाह वक्रायीनायलः यि० नवक्रानकायनागवक्रा०

५०

१२

मायल० श्रीवक्रालिगिर्जालिखाययिगव्यः॥ अथवाप्रह्लादसिगकवल्लारुगवानकार्यः॥ अ
 थवारुगां नं वनीयश्च नीमध्वनृकाकार्यः॥ गनः आत्माननस्याः यमि नूयनध्वत्वाचेर्ववत्साध
 नीया॥ अथवास्वसिर्गदवीनूयनध्वत्वासाधयेत्॥ सिद्धासनीवृद्धत्वमयिददामि॥ किम्यून
 नयाः सिद्धिः॥ अथवाप्रह्लादीर्यदस्वज्याधर्नसाधयेत्॥ अथवासत्त्वयर्मिकेहीस्वज

१२

उवा

ऊ२

पानकनाली श्री श्री कृष्ण सर्वप्रसादां साधयेन् ॥ सहजं यत्तु महानाथं पूर्ववत्सिद्धिं भवत्तु गवतः
यदसिद्धिः ॥ अथवा वादि कृष्ण युगिमासा धनं भवत्तु कर्तव्यं ॥ अथ सर्वसाधनं मनस्कृदायुष्यज्ञा
निलाहमर्पसाधनं यक्षकायमर्पवायथारिभर्गयैश्च गव्यं नृपशाल्यं सर्वगन्धैः सप्तैर्वा पूर्वव
त्साक्षात्कनाली यन्निरुहं गृह्णन् ॥ मासाक्रमहनीम्युक्तं कृत्वा सकलीना

५१

लक्ष्य२

ख५१

पिंजराय ॥ अथ नैवालिगखं विद्याधनं रात्रिं नृवर्षादिभिः ॥ अथ शिखरकुलकोशः
आसं सार्पयै कामेर्विलसति ॥ नृवर्षं यत्तु क्रिष्णलादी साधयेन् ॥ नृवर्षादिमर्पयामासा
धयेन् ॥ नृवर्षं यत्तु कर्मक्षेत्रवीनवसुधं यत्तु प्रसादा नमिनायुष्यं कर्मक्षेत्रकादी साध
येन् ॥ नृवर्षं यत्तु महं देवलीलादी साधयेन् ॥ नृवर्षं यत्तु महं यक्षैर्हलमानिरुद्धं पूर्ववत्तु वि

युक्त२

[illegible]

किर्ती॥ मन्त्राः॥ सप्तमं दामदवकामदवादिवनाली॥ नागकेशवकासुमयवासकादिनागना
गिनी॥ २॥ अक्षककासुमयीतात्रिनीसुनसुन्दरीलक्ष्मिनिप्रिया॥ अक्षमानटीयप्रिनीअनू
नागिनीहीयन्दुका॥ वृक्षदूहिनावधूकामध्वनीदेवनीआलंकिनीननवीनादिप्रिया
हीसाधयन्॥ वटकासुमयीहीदर्वीनागान॥ २॥ दवदानुसमांतिनीरुमाअभिदेवीकां

५२

[illegible]

43

[illegible]

धयनिपाऊयन् ॥ पादाक्रमधनुजमुकंदनदननिपाऊयन् ॥ नृकवागवा नलनसर्वानियक्ष
 नकर्म्यकुमान्यपिदहनि ॥ सर्वपायभनाभनिपाऊयन् ॥ नृवसर्वरूपैर्वानगमागुननशी
 कनामि ॥ नक्षत्रक्षमासिमिनिपाऊयन् ॥ नृवसर्वगुनक्षोमावदहनि ॥ अथपुठलनकमिवला
 हं ध्यात्वासर्वयमुद्रमायं वा शरुनभनवाननिजमकुलमन्युजकिन्माक्षिणहीर्गना
दि

५४

उमिन् ॥ सर्वगजयसनक्ति ॥ वाउनकालेजकिन्मादिकमयसात्रयनिपाऊयन् ॥ अथखटिकायाश्रुप
 कभनावद्वयप्रसूदलयमानुर्गमकुलवासीयूटीकत्यकेबर्हजालेनवेक्ष्यत्वाद्यावेर्लवात्र
 यन् ॥ वालानां नक्षीकनामि ॥ नक्षत्रक्षवालकमिमिनिपाऊयन् ॥ मदननवननुनकुलसाध्यपूरु
 लिकांकुत्वागन्वृमिद्वयैर्गमकुलमहिलिख्यनाजिकादिनायुक्षियेन् ॥ ननः कलकनमूर्खी
रुदि

लघन ॥ पुनिवादिना मूर्य की लिन रवनि ॥ देवदरुस्य मूर्य की लघनि धाई वगुष्यथ निखनुन ॥ व
वयादी की लघन ॥ गनिमागनि कृष्ण धनि ॥ देवदरुस्य यादी की लघनि धाई ॥ हृदय की लघन
॥ कार्य कृष्ण धनि ॥ देवदरुस्य हृदय की लघनि धाई ॥ मानूषासि की लकन लाह की लकने
वासी कावक ककन वा प्रायग नैति की लघनि ना निन सखि लिना निवथान सखरु लानिख

५५

नि देवदरुस्य मूर्य काई की लघनि धाई ॥ यस्य गुरु द्वात्रे निखनुन नमूका दयनि ॥ देवदरुस्य
दयनि धाई ॥ अरिम निरुमम नरुस्य नावा प्रय कंटया निःक्यादूर्वादि दयनि ॥ देवदरु
रुमूवाटयनि धाई ॥ यूरुलिकी कक के निरिखणी जयन ॥ देवदरुस्य मान ॥ यनि धा
ई ॥ खजादिक मूरु वगवाना निजम कृष्ण निरुम मूरु पद कूर्यान् ॥ जय मासा दयनि ॥

मत्कार्यमदिभ्यवलिंदयारुस्यसिध्धिनि॥ पायनागमदिवाधिमपूत्रयिद्धमशरुनभन
 नाशिमन्त्रुनिजमन्त्रुदामयमार्जुयन्॥ अमूकस्यामूकनागप्रणिमाजयन्॥ सर्वव्याधि
 भांरुवनि॥ कथेवदभंशूकममार्जुयन्॥ हस्तनालूदयनदेवदरुस्यविषयं नागप्रणिमा
 प्र॥ निर्विषं कृन्तु॥ प्रववणीरुगमायतुस्वस्थानमागर्तनमंगनमूककंठशगुगोध्माः

लि२

५६

नायादप्रणिमन्त्रुदामयमार्जुयन्॥ अमूकं यवणामानप्रणिमां॥ प्रवयववेदाकर्ष
 ध्मात्वाजयेदाकर्षरुवनि॥ अमूकमां कर्षप्रणिमां॥ आत्मानं धनधान्यादिपत्रियूर्ध्व
 ध्मां जयेत्पूष्टीमकर्वकिमां॥ पूष्टीमन्त्रुगिकादद्वयसंयुटमध्यपूर्वयदुक्तकंठ
 लिखित्वायश्मन्त्रीयेसहताम्वर्त्तुरुक्षयन्॥ सर्वहनादिनागप्रणिमां॥ चन्द्रग्रहसू

त्वा२

४

म्यग्रहवाक्षीनरुक्षेष्टदधिरुक्षेष्टवा. पाग्र्यपूत्रयित्वा. सभर्कनक्षत्रघटनसफास्वत्रथम
 प्रायनिष्ठापयित्वाष्टयेंग्राह्यादिर्गकत्वाहस्ताख्यामवदूर्यगावज्जययावन्मूकानरुवमि॥ नरु
 दयस्य २४ भगामूर्ध्वमि॥ अत्रनेवक्रमेष्टदधिरुक्षेष्टवा. पाग्र्यपूत्रयित्वा. सभर्कनक्षत्रघटनसफास्वत्रथम
 । कर्तुंनेवदधिरुक्षेष्टवा. पाग्र्यपूत्रयित्वा. सभर्कनक्षत्रघटनसफास्वत्रथम

५७

कनक्षी. अत्रनेवदधिरुक्षेष्टवा. पाग्र्यपूत्रयित्वा. सभर्कनक्षत्रघटनसफास्वत्रथम
 स्त्रीकृत्यजयेदाकाशिययन॥ नरुदधिरुक्षेष्टवा. पाग्र्यपूत्रयित्वा. सभर्कनक्षत्रघटनसफास्वत्रथम
 आनकजलादुद्धृत्यक्षीनरुक्षेष्टदधिरुक्षेष्टवा. पाग्र्यपूत्रयित्वा. सभर्कनक्षत्रघटनसफास्वत्रथम
 भावद्विगमममिमाजयन्॥ ००० नि सा ईदभादुनेकेत्येः॥ ॥ नर्वदिनीयेरुनीयेमू

लमनुयाः कल्पः ॥ प्रथममालामनु कंककीयशुक्लकंकनलिरिवत्वा नीलवस्त्रसूत्राख्यामात्र
 स्मृतलिनस्यभित्तसिवाहाकंकवायशुक्लामयदंदत्वावन्धप्रसूक्रोधवैजसामूकस्यहर्तैः
 नाभयमिदिकत्वासर्वहनादिनाभयमि ॥ वन्धनकालनागिर्दीयवर्तिसूचीकल्पदग्ध
 मत्स्यमयमिदिकत्वावन्धननिमज्जित्वो ॐ दंष्ट्रासर्वहनादप्राप्तपुनरनुभाष्य

५८

शयनाभयमनुमहाभयमिदिकत्वावन्धनमाहायमि ॥ यदिनायसत्रिव्यार्थददारगवान्कुड्मस्तोक्षन
 यवकंकनमिलयुसात्रदीकत्वाकंसप्रमि ॥ ॐ स्रक्वातेअत्यका (तदग्रौप्रातः) ॥ नगरुडंरुवध
 मि ॥ नृवसर्वरूपप्रपठितमागुहनादीकनामि ॥ अथनमूलमनुकीसर्वकनामि द्विगीप्र
 मालामनुस्यायामभवविधिः ॥ रुगीप्रमालामनु (तत्स्रष्टुयितुमश्मिन्नुदप्रातः) व

दि०
नदा।रुवनि।रुक्पिपुमरिमन्नुविकालवेलायीविविकुदप्रानुमत्कार्यमभनत्सर्वसिद्धि
धनि।अथकल्यस्तुपूर्वम्।युर्ववद्विभिनाभुक्पुनियदमात्रह्येयर्हमासिमावत्युर्ववत्कु
र्मा।मालामन्नुमयिषसहस्रयुर्वसवारुवनि॥द्वानाविषासमन्नुमामूलमन्नुवत्कल्यः
॥अथरुगवममन्नुकल्यः॥अथद्वीनाविषासमन्नुमालामन्नुद्रयात्कवित्वीयातिह्यवणी

५२

दि०
धुमवसयप्रगारुगाममूलमन्नुस्यकल्यारुवनि॥अथनमानुह्रवामहस्रतर्लिगीगत्वा
अष्टुषगर्जुयेन्।यस्यानाम्नासाआर्चनिकामयन्॥मन्नु॥उर्वोदत्रिअमूकीमायागुद्रह
ट्॥जेनिकपारुगमालिरवहमोवामहस्रनावष्टुह्याष्टुषगर्जुयेन्।यस्याम्नासाआगच्छ
नि॥सर्वयसकाहिमनिर्दकत्वायून्वयनाउयन्निर्वाधिरुवनि॥मनसाकल्ययन्।

ना२

उदकं यत्रिजया रुन्धा दुधिनं भवति ॥ वर्मं यत्रिजया वग्नु एव सर्वजनपिणारुवति ॥ त
वर्षं यत्रिजया प्रस्यखा नैयानंदप्रारुं वशीकरोति ॥ एतवालत्र हूँ प्रस्यगतवन्धमिज
रिमन्तु स ज्ञेयवति ॥ अदिह्यारिमखा प्रस्यनाम्ना जयोरुमा कर्षप्रति ॥ विजत्र नामत्र
हूँ प्रस्यगतवन्धमिज विजत्रारुवति ॥ काकस्तापूत्र हूँ नाकाकारुवति ॥ यूनवर्कणत्र

३०

ब२

हूँ ना यूनवर्कणारुवति ॥ स्त्रीकणत्र हूँ ना स्त्रीरुवति ॥ नृवं प्रस्यप्रस्य कणनामादित्र हूँ कि
प्रणनस्यनस्येव नृययनिर्वरुं नरुवति ॥ प्रस्यनाम्ना जयोरुस्यत्र काकृष्टिः ॥ अदिमिर्वन
प्रना प्रीदृष्टा जयत्सवत्थारुवति ॥ हूँ निदवीमन्तुकल्यः ॥ ॥ वलिमन्तुवलिदृष्टा
सर्वविद्वद्याधिविद्यादिना निर्वरुं ॥ प्रसिन्काय समस्यत्र वलिमूयदत्र हूँ हूँ हूँ हूँ

धमि॥सिनयव्यामनावहीत्रभानावसगन्धिमनावरुकुमनावरुकिणनावत्रुवृषीरुः
 लोरुलिकीवपुमामावाग्री॥ॐवतुमदावायव००मीवलिङ्गद्रुजुमूककीप्राम्प्रसाधप्रहं
 रुद्र॥००॥यशारुत्रभनतापिरिमन्त्रुतिवदप्रदिविकनस्याशिमर्गसिध्दमि॥अथरुगव
 नामनमन्त्रु॥शुरुत्रभनजयनकद्रुनेलनगुर्विध्दरुगनकत्रयुदियनूपिववसख

७१

नयुररुविमन्त्रुमन्त्रु॥मननेववृषीरुद्रताद्रानिर्लवमि।सर्वरुद्रु(हनायि॥युथममालाम
 नुरुद्रुद्रु॥उभादलकमलम(ध्दलिखत्रीलसगुंनववृषित्वाणनीत्रध्दत्रयसर्वगुत्रद्रु
 रुवदि॥गालोवनालेकनलिखगुद्विनीमस्यायपीविधि॥उवमन्यनकुकल्याकमय
 नेवनिमाद्रुप्ररु(थेवसर्वसिध्दगिरावनामकपागिनः॥००॥यकलेवीनारव्यणीवतुम

हा नाथ हारु सर्वमनु कल्यण्टलो द्वादशमः॥ ॥ अथ रुगवत्माह ॥ स्मरन् वीर्याणि त
 केन सत्त्वप्रदवदयुत ॥ वर्णावकीटणी कार्या सिद्धिः केशाजुलस्यन ॥ रुगवानाह ॥ मान
 तीयादिवेदयूवद्वयस नदूषकाः ॥ नवामवधनैर्गृह्य सत्त्वस्थादिनमावप्रभु ॥ वलुः स
 तीदिवेस जायति व्यामाननैर्सर्गा ॥ रुद्रप्रभुत्सर्मा संतुष्टिवत्सर्मा समहिमः ॥ विष्णुमा

३२

स्वयनमोदधिः कृदप्रधानमत्यन ॥ सिद्धमनिर्विकल्पात्मा सुयुक्तिनिहायप्रभुतः ॥
 मनमनेवपायनसत्वागच्छन्मन्त्रधामि ॥ मनमनेवपायनपाजीमीर्द्युपुसिद्धमि ॥
 अथरुगवतीद्वयवर्जीरुगवत्कमवमाह ॥ कथंरुगवन्वियत्रीनसम्भवेत्तत्त्वमा ॥ ॥
 अथरुगवानाह ॥ नागनरनरनागावद्विद्वत्ताः स्थितिना ॥ विषमपि विषमद्वय
 व

स्वात्वा

३

दधायुयागः॥निःस्वरुवङ्गद्वौसिद्धाहमिगिरावप्रदू॥स्रउपक्षवसर्वप्रथाकायि
 नवेध्वम॥सर्वपायद्वर्पकृत्वाविद्यत्रीमनेवसिध्वमि॥नकेनामिस्रउपयथाप्रागीयाजेक
 नत्यत्रः॥विद्यत्रीमसम्बन्धेसिद्धिसुस्यनविप्रम॥पायनासि नयध्वनिःस्वरुवस्व
 लवम॥लोककोकृत्यनामार्थमयानयुकटीकर्म॥ॐदानी॥
 कं

५३

दी२

३

सायिप्राप्रागित्वावनाप्रायसर्वसत्त्वार्थद्वनवा॥युकटीसम्बन्धवक्ष्यधूत्वप्रधूनायिः
 यानवप्राप्तवर्धकूर्यान्वयत्रस्वायहात्रर्ध॥यत्रस्त्रीद्वननेवनेवरुषमृषाववः॥प्रप्र
 नेवयिवदीनालोककोकृत्यहानय॥युकटीमिहायदंश्रुगत्सादत्रक्षीसमात्रहंगाप्र
 दूर्कसम्बन्धप्रनवमार्गदानीहि कथन॥नत्तमोभितःकूर्यालामकंकर्कषासुभोना
 ल

नात्वेकात्रैकत्वाधायप्रदात्तदहके॥यादमान्पूर्वकार्यभरवलीवगथाकटो॥सचदसक
 भाखजंयाभवाप्रयुधायप्रन॥मोलेप्रमृडर्णकार्ययश्चवृद्धयुगागनः॥यश्चवीनवकर्तुः
 यीभसभूकमविरवगुप्रन॥दभादाईवयस्तानुगहसवर्षासमायप्रन॥पूर्वकिकूलरोद
 नकलावेवयुक्तयमेन॥कलायागमलीकार्यमगुप्रन॥नित्यमशसचकद्रिश्चवेदया
 रु

५४

दामवैवेवकषात्रक॥कूलरोदनवेकूप्यानुवर्तुहदयमिस्तनो॥गृहीत्वास्वकूलीप्रसीयप्र
 कूलीम्यासमादिन॥स्वच्यानुसमाष्टं॥प्रत्ययातानासमायप्रन॥नत्तादिकमहावनकू
 र्यादीर्वादिनिर्मिर्न॥अथवावेगसाकूप्याद्यप्रलारः॥प्रवर्तुन॥विद्वन्त्यश्चसमयाकूल
 यश्चपुरेदनः॥पूर्वकिकूलरोदमागनद्विष्टीद्विष्टीसमायप्रन॥सिधमसर्वथाप्रागीनागुका

व२

प्रा

म्वं

म्याविवात्रधाम्॥युहापाप्रसमायागान्तर्यदयानुबोधन।युम्भतार्त्तगत(केवसर्वस्वी)।
कमव॥दानयालेमिनायूर्ध्वरुवस्थवनसीमप्रशानत्यनकायवाविहंसवर्तगारहोख्यनः
॥लीलयालेमिनासुयासहगपुनरवाहन।युद्धनीपीउन(केवदानियात्रमिनालिप्य)॥सा
दनीदीर्घकालेकुनेपुर्णसमाहितः।वीर्यायात्रमिनासुमानसुविहंसुपात्रनाह॥सर्व

श्रि२

३५

वेमाहावनूयधधाम्नामिनामनाध्वानेपात्रमौम्भुनूयरावनायुहायात्रमिनायुकी
हिना॥सूत्रनकमासोगमावेद्यूर्ध्वरुवस्थवनसीमप्रशानत्यनकायवाविहंसवर्तगारहोख्यनः
पुष्टमिकथन॥सूत्रयागसमायुक्तायागीसंरात्रसीरुतःसिद्धमदधमागुजायुधसुनस
मन्त्रिनः॥यथालगामूर्ध्वरुलपुष्टसमन्त्रिनिदी॥नृकदधमवसीवाधिःसंरात्रदप्रसं

रुगा॥ सगुणादनाहमी॥ रुवह्यवनसंभयः॥ रुमिस्तुमुदिनाहमाविमलावर्चिष्मतीनथा॥
 पुणकत्रीसूदूर्ङ्गा॥ रिंमूखादूनीगमावला॥ साधूमतीधर्ममिद्यासासमन्तपुराणथा॥ निनू
 यमासनवतीसर्वगुणादनाहमी॥ ॐ ह्रीं क्लीं ल्रीं नारायणी वधुमता नाथधनकुवर्णा
 यटलसुगुणादनाहमी॥ ॥ अथ गतिन्यर्षदिशमन्तुरादनामवतुमागीरुगावकभक्तदवा

बहु॥ यत्रियुद्धामादनाथविमर्शमवलसीरुकी। नृकल्लवीनसंज्ञाववधुमहात्राप्रधेनि॥ अ
थराजवा नाह ॥ ॥ युद्धीयाप्रसमायाजान्निष्ठनसूखनूयिणी। युद्धीयायात्मकंनञ्चविनाज
ननामयालिङ्गं॥ ननेवावलमाख्यातवज्रसत्त्वस्वा नूयिणी॥ द्विपुङ्गेकमूर्वीणान्नीस्वच्छमयुनि
द्यमनः॥ श्वरुपायकनाख्यातुपुष्टालिङ्गमनत्यनसत्त्वयम्यहमासीनीयप्रवन्दुनविशि

न॥ आसीसा नक्षत्राणि विष्टु दिव्य भोक्ता नसीहृत् । न नदमय लीखात् सर्ववृद्धे सुसविनी ॥ अथ
 लम्बेयुगा विज्ञासर्वे नैर्ध्विका जिना ॥ सत्त्वार्थ दिक्पूर्व किमावदीहृत् सार्व ॥ ॥ अथ सम
 नुरडा वाय ॥ अकात्र धकिमा र्यात् वकात्र धकिमयुत । लकात्र धकिमयुत कीदृशीता
 मसंग्रह ॥ रगवानाह ॥ ॥ अकात्र धा कृष्टि मसह उच्चरा वमित्युक्ती । वकात्र धानद
 न

६७

कर
 यत्र मानन्द विनमानन्द सहजानन्दारब्धे वदुना नदस्य रावमूर्क । लकात्र धललना लालिनी
 सत्रनेमूर्क ॥ अकात्र धा यनपुष्टा । वकात्र धा यूपया प्रकेशप्रक्षयाये कथा गधालकात्र ४
 सखलक्षणा ॥ सनुवेक लक्षवीनसु नुकनुकल्लेकः स्मृतः । विनागमर्दनादी २४ र्यागन
 कल्लवीनक ॥ वल्लुस्तीर्यवलादेवमागि वृद्धानसं भाप्र ४ । एवमप्रवायल्लक्षणात्वीनः

न१

यु

मन्त्रिकमववा ॥ अथामन्त्रवर्णध्यानाद्विषयस्य पूर्णमन्त्रवर्णध्यानाद्विषयस्य
 त्वेकविरावयम् ॥ यद्वा कुरुकुलीनाम् अथवा विरावयम् ॥ सिद्धिर्गन्तव्यं ॥ जनया
 जीभीर्गुणसंज्ञाम् ॥ यद्वा यत्र हि न वाथ रावयत्समाहिता ॥ रावनावलनिष्पत्तिश्चेति वा
 मन्त्रवाच्यम् ॥ अथामन्त्रवर्णध्यानाद्विषयस्य पूर्णमन्त्रवर्णध्यानाद्विषयस्य

६८

कर्मलुलीनाम् अथामन्त्रवर्णध्यानाद्विषयस्य पूर्णमन्त्रवर्णध्यानाद्विषयस्य
 धर्मात् ॥ यद्वा यत्र हि न वाथ रावयत्समाहिता ॥ रावनावलनिष्पत्तिश्चेति वा
 मन्त्रवाच्यम् ॥ अथामन्त्रवर्णध्यानाद्विषयस्य पूर्णमन्त्रवर्णध्यानाद्विषयस्य

५१

कुसुमपटः कृष्णविनागः विनागः ॥ अथ मृदुमायागी प्रहामालिङ्गनिर्हन्त्री विनागस
र्वनासत्ता वृद्धसिद्धिमवाप्नुते ॥ ॐ ह्येकं लब्ध्वा नाशोऽपि न भवति ॥ यत्नमात्रेण च य
पटलमथ मुदणमः ॥ ॥ अथ रुगवती द्वयवक्रवाच ॥ नृकवीनः कथं सिद्धिं कुरुहि
त्वं पतनमभ्यस्य ॥ अथ रुगवतीनाह ॥ ॥ मृदुलिकाकायपातनकृष्णवर्णविनागवधेन ॥ गतः

६२

हे नर्तक्यगुह्यं नृशशास्त्रं ॥ अथ मृदुमायागी प्रहामालिङ्गनिर्हन्त्री विनागस
र्वनासत्ता वृद्धसिद्धिमवाप्नुते ॥ ॐ ह्येकं लब्ध्वा नाशोऽपि न भवति ॥ यत्नमात्रेण च य
पटलमथ मुदणमः ॥ ॥ अथ रुगवती द्वयवक्रवाच ॥ नृकवीनः कथं सिद्धिं कुरुहि
त्वं पतनमभ्यस्य ॥ अथ रुगवतीनाह ॥ ॥ मृदुलिकाकायपातनकृष्णवर्णविनागवधेन ॥ गतः

दीर्घा॥ कृमिमलविभुद्धिः॥ ॥ रावताविभुद्धिः॥ यथमयूरायूधसंज्ञाविभुं
 भिष्यं कर्मभुन्यता हानसंज्ञा नाम नदी विभिष्यं॥ स्वकुदहोः न नारवदहः॥ कृतागानयम्य
 नैवद्विभुवनी यप्रधानिः तदुसर्गभुक्र (म) गिनं हं कृमिर्मोतुः यिदुत्रन नारववि
 हं (म) कृतागानयम्य नैवद्विभुवनी यप्रधानिः तदुसर्गभुक्र (म) गिनं हं कृमिर्मोतुः यिदुत्रन नारववि
 हं (म) कृतागानयम्य नैवद्विभुवनी यप्रधानिः तदुसर्गभुक्र (म) गिनं हं कृमिर्मोतुः यिदुत्रन नारववि

७०

यन्मृगाय मदनम विरुवसं कर्मन् यप्रधानिर्गनः यानुः यिरुमानदी तत्यदया फप्र
 मारुग्रहदीप्ता नानु नवात्सत्या द्विभिष्यसूखाय सायिपूगानु जनयमि दूरिहृ (म) गि (म) वना
 यलादयः माहव द्वादयः पृग्रा ४ यिरुमान ४ संभयनयेनाः नानुवनुवगिनावत्मानय
 नू दूरिहृ (म) कामयनू ज्ञानानु नवात्सत्या द्विभिष्यसूखाय यव ४ पृग्रा ४ यिरुमान ४ संभयनयेनाः नानुवनुवगिनावत्मानय

٥٩

नाथूद कुण्ड

ገላትያው ይህን ፊርማ አድርጎታል፡

प्रवर्जितः ॥ अस्मा यथैतन्मयं दशसिद्धिः ॥ यस्माद्यानमिनात्रैका यथैतन्मयं दशसिद्धिः ॥ ॐ
त्येकल्लवी नारयः श्रीवकुमहात्राय दशमकुविभुद्विपटलः यथैतन्मयः ॥ ॥ अथ रत्नगव
त्पाद ॥ कथमस्य प्रकलोकः कथं मां निक्षप्यूनः ॥ कथं वासीरवसिद्धिर्कृदित्वेयनमप्य
नः ॥ अथ रत्नगवत्पाद ॥ ॥ अथ विद्याप्रणयः संस्काराः संस्कारप्रणयविज्ञानं विज्ञान

७२

७४

सर्वदा कर्तव्यं नृपं विदुषा दीरा कारुण्यगवतीत्यर्थः तस्मात्संस्कारेण वनि ॥ सर्वगुवि
धः ननु कायसंस्कार आत्मा संयुक्तः सो वाकं विदुः ॥ कुविदारौ मत्तः संस्कारेण ग
द्वेषमादाः ॥ नृशिर्षकाः सुविद्याया सति पुण्यसक्ति विनर्कयमिस्तुलंगुल्लुकिवि
वात्रमगिष्ठं संगुल्लुकि ॥ अतः नृकावनिद्विष्टा सुव्यवस्था ॥ तस्माद्विज्ञानं सर्व

५२ अं

[illegible]

नो २

विज्ञाननिग्रोधनामनृपनिर्धनोः नामनृपनिग्रोधनत्वजगत्तननिग्रोधः वजगत्तननिः
नात्वे धास्यर्धनिधः स्यर्धनिधो नो द्वदनानिग्रोधः वेदनानिग्रोधः रुषानिग्रोधः रुषा
निग्रोधदूयादाननिग्रोधः रुषादाननिग्रोधवनिग्रोधः रुवनिग्रोधज्ञाननिग्रोधः नि ७३
ज्ञाननिग्रोधज्ञानमनृपनिर्धनोः स्वदोर्मनस्यायासातिनृधनं ॥ नृवमस्य

धर

मा

मनीष्यर्थः नामनृपनिर्धनोः स्वदोर्मनस्यायासातिनृधनं ॥ नृवमस्य
नृपनिर्धनोः स्वदोर्मनस्यायासातिनृधनं ॥ नृवमस्य
नृपनिर्धनोः स्वदोर्मनस्यायासातिनृधनं ॥ नृवमस्य
नृपनिर्धनोः स्वदोर्मनस्यायासातिनृधनं ॥ नृवमस्य

रि

तनाति। बहूः। अग्न्यादि। काकापसनांति। नृसिमुकः पूर्ववत्सम्भ। नीत्यादि॥ मरुता
 स्यर्गः नृपञ्चदशं धनं सत्यं धर्मं धानुसमायत्तः॥ मरुः शृङ्गसूयादिलावः॥ मनुज
 पादानं नृत्यापकं कर्मः॥ मरुः शृङ्गवर्धपुत्रः॥ मनीषा मिषुकटी कत्रदा हि निष्यत्तिः॥
 उवादानं यं वस्त्रं भूषणम्॥ मनीषा पूनाजननी लावः॥ सनद्युविह निरोधः॥ मनीः
 रजा मन्त्रेष्टा विह नृपदुःखं नृपका कर्मः॥ मनीः॥ मनीः कर्मिणा पथ्या विह नृपदुःखं॥ व्याः

७३
२

दि२

कवलस्य मरुतादुःखं नृपका कर्मः॥ मनीः॥ मनीः कर्मिणा पथ्या विह नृपदुःखं॥ व्याः
 न। वृद्धं नृपदुःखं नृपका कर्मः॥ मनीः॥ मनीः कर्मिणा पथ्या विह नृपदुःखं॥ व्याः
 मनीः॥ मनीः कर्मिणा पथ्या विह नृपदुःखं॥ व्याः
 *थ सर्वज्ञे निह॥ मनीः॥ मनीः कर्मिणा पथ्या विह नृपदुःखं॥ व्याः

[illegible][illegible]

स्वात्राः सामान्यविष्णवावस्थाग्रहिणः विरुद्धेति विज्ञानानियुक्ता भवन्त्यनुहना
त्मकं॥ पृथिवीगुणत्वं वाक्कटत्वं आग्नेयत्वं गमिष्यन्ति तत्त्वं नडासुत्वं यनियावत्त्वं
त्वं पापनाकत्वं नयुसानलघुसमूदीनक्षत्रं॥ नस्मात्त्वजामनानि वहुः॥ अग्न्या
ह जिह्वा कण मनांसि॥ अग्निर्मुखः पूर्ववत्पार्श्वे गीत्यादि॥ नस्मात्स्यर्धः नृपणद्वयस

७५

स्यर्धधर्मधनुसमापरुषः॥ ननः सुखसुखारिलावः ननायादानं वनः प्रायकं कर्मनना
रवागर्हयुवणः ननाज्ञाति ४५ कटीकनक्षत्राणि नित्यरिः॥ ज्यादानं य २४ स्तुतं च लारु ४ न
नाजनायुनामनीलावः॥ मन्त्राविरुद्धेति त्राधः॥ ननाज्ञा नामन (४) विनयन (४) का
कलावति मूकिर्मपानवर्षाधिगमिष्यन्ति दवना व्याध्यायुयद्रुगण्यदुःखीरुवति

नदर्वयूनः पूनर्मनसि पात्रय दोर्मनस्यीरुवमि. दूर्मनाञ्चयिकतायूयद्रुतउयापासी
 रुवमि. अयमर्थः. अविश्रादिषु जायतनयम्य कताकता रुवसत्वे. अकरोवसि नस्तेलो
 कययमन्. ययमिस्तीयू नूयाननूनकानू. ॥ नमः. नीमजागिक कर्मभापुत्रिगायज्ञो
 नावूत्यनोरविश्रादि. अयमिस्तीयू नूयोननोदृष्टातीवमस्यनमः. स्याजित्ययमं. ॥ ननु

७६

न२

यदि यूनूयारुविश्रादि. नदामानीयूनूयाकाययमि. लविमाननियनयूनूयारुवमि. ल
 विविननियमहायदिषु. नागद्वयोयसूरवदः. स्ववदनेः नमः. कताकात्रे. नानयासाईन
 निकत्रामीनितिक्रयन. दूःखासूखावदननयायाम्. एधारुवमि. नमः. पूर्वकर्मवागयु
 निगामहाहकृपा. नूननर्मामीनिकृत्वा. कथनकाहियूनूयाममस्तीयकासयनयूनि

क. जो. ता. ना. स. क. म. ध. व. रु. वि. धि. रु. मि. ना. मा. (र्ग. ध. पु. वि. ध. न. स. ध. पु. क. धि. धि. न. दि. रु. म. धि.)
 क. य. रा. वि. मा. न. न. का. म. म. ना. मा. त्मा. नी. य. ध. मि. स. र. व. का. न. ध. म. या. द. दा. मि. न. न. : भु. क. ध. म. म.
 त्र. सी. रु. य. म. दा. ना. ग. न. ना. (रा. ध. व. ती. ना. धा. धि. कु. र्व. जा. नि. ग. र. य. मा. नु. ४. य. पु. ध. धि. धि. न. स.
 व. ज. ध. धी. ध. नी. ना. धा. क. र. र. त. ना. धा. सि. न. : दि. ने. ध. क. वि. नु. व. रु. मा. रु. व. रु. व. मि. स. व. ध.

धू. पा. २

सू. धी. २

पु. म. र. धा.

मा. १

क्र. म. क. म. ध. क. ल. ला. व. द. ध. न. ध. धी. ना. र. वा. पु. ना. न. व. रि. द. धा. रि. व. धि. धि. धि. ने. व. मा. (र्ग. ध. पु. वि. ध. रु. म. धि.)
 ने. व. मा. (र्ग. ध. नि. र्ज. म. जा. मि. र्ध. वि. मि.) प. दि. वा. सु. रु. वि. धा. मि. न. दा. हा. वि. धि. नु. र्ध. ना. (ग. र. व. मि.)
 हा. वि. मा. न. नि. व. द्वि. य. ४. न. न. : आ. त्मा. नी. सु. प्र. य. य. ध. मि. हा. वि. मा. रु. मि. ना. मा. (र्ग. ध. पु. वि. ध. न. स. ध. पु. क. धि. धि. न. दि. रु. म. धि.)
 य. मि. त्वा. ध. पु. क. धि. धि. धि. रु. म. न. स. धा. नु. वे. ज. न. मा. धा. मि. र्ध. मि. न. न. : पूर्व. व. नि. र्ज. कु. मि. र्जा. य. न. न.

देवमविष्टादिशिल्पाकाराप्रकलाकाराभ्ययस्वस्वन्धनवर्गवदुःखसंसाविष्टः यथैस्वन्धः
। नवदुःखनकार्यप्रसिद्धाकारार्थिनी ॥ अविष्टादिनिवाधास्वन्धनवर्गवदुःखसंसाविष्टः
एवः । भुक्त्यनार्थकृता । नवदुःखनकार्यप्रसिद्धाकारार्थिनः । नृत्तान्नरुवाभाकारायाएव
ः । नृत्तान्नरुवाभाकारायाएव । नृत्तान्नरुवाभाकारायाएव । नृत्तान्नरुवाभाकारायाएव ।

दुना नन्दकमलविन्दुवनिर्वाणप्रतिष्ठितामरुः॥ नाथात्यप्रदलाका नागहृपाद
पङ्कजः। अथलार्थयनिष्ठा नाद्वृष्टसिद्धिसमध्वनि। नवलनियुक्तासंलग्नसुखनसमदि
नंदुपत्रिहं। विधूनन्विनससमात्रीनदवलसंरूपायकथिनं॥ ००॥ एकल्लवीनाखीनी
वधुमहानामधनकृपणीस्यसमूयादयटलःधातुभमः॥ ॥ अथरुगवलाह॥

नाथदीर्घपूटं शुक्रनकलिंगरुगसुने। पुवद्वभक्तनकडं व्याधिव इत्तनाभनान्॥ इति
 मनावभयनारुवा रुद्र द्याकशेनेदयि। शुक्रस्यसुम्नाइक जाव द्याकहिधागेकी॥
 अथरुगवर्त्ताह॥ ॥ साधूसाधूक नंदविप्रदहमध्विगस्त्या॥ वदनानाविधं
 नवे ॥ १२ ॥ लोकाथसिद्धयभनीनभधमदादोयभक्तिसमात्ररुन्। शुक्रवस्तुक्

७२

केंदंवरुं ॥ १३ ॥ लोकाथसिद्धयभनीनभधमदादोयभक्तिसमात्ररुन्। शुक्रवस्तुक्
 शुठ्ठ्यानाकृष्णजीर्णपुत्तभनेम्॥ केंदकाभयनसीनेलीयिवन्नेवशसीपूर्ण। नोद्रेप्रमक्ष
 यागनरुवेन्नेवनस्यनासेनी॥ हिनेभावीनसीकिश्चिसेन्नेवनवसीपूर्ण। कृपाया ॥ २४
 स्थिर्गिक्त्वा रवत्पिरुस्यनाभन॥ केंदकाभयनसीनेलीयिवन्नेवशसीपूर्ण। कृपाया ॥ २४

रुष

^{रुद्रा}
 मरुवरेलं नाभनवनसंभयः॥ नसं कर्माणां मरुः ^{रुद्रा} यः पिवन्नवधसंपूर्ण। नृणां
 (॥ मरुवद्व्याहृतानमधूनभयः॥ नृकैर्कदिदिनकृपात्यन्धोवधमात्ररुत। नृ
 नेवरुलंदनत्रनिष्कृतं नान्यधायि॥ ॥ लसलीवलकलं नृकम (॥ नरुद्रय
 न॥ सकधामनिर्गकलोपानवशजनरु (॥ प्रत्यहं वावकीवन्तु मुकु (॥ शिखवर्द्धन

२०

^म ^{नि}
 ॥ इत्युमहानोयः ^म दंदिवामनीमकूटं रुद्र॥ मटिर्ननूकलं नवनीदं वायिमाहिवा
 वास्यम (॥ नृकैर्मदं नृकजसंरुव॥ लिङ्गकर्तृसुनानाकुरुगशापिविमर्दने॥ सर्वका
 र्थविमर्दं नृकवर्द्धननसंभयः॥ निर्मखीदं नृकत्वा मृदुपित्वायनवे। प्राणिम
 धातुप्रदिया रुद्रां मडुन्धवर्द्धनी॥ दाठिमस्यत्वयः कर्त्तृकैः ययत्सर्वयनेलका रुनी

प

नृ२

विमर्दिगं वर्द्धन्मृत्तिनीकाथनस्यगः॥८७॥ नमस्यवयाञ्जुधगन्धवहनीकृतेः॥ क
 ल्कैः समर्द्धमन्त्रिगस्तनकर्द्धववर्द्धन॥ वात्रद्यपियथली॥ अनायनाडिमाकनेसभा
 मादिगोवात्रवनीमनसर्द्धनालिजवर्द्धनीनं॥ सवालकद्वनादिदीमादिवानवनी
 ननमर्द्धनालिजवर्द्धनी॥ धूसरस्त्रसनाञ्जुधगन्धमर्द्धपिष्णुमादिवानवनीममिह

८१

विमर्दिगं वर्द्धन्मृत्तिनीकाथनस्यगः॥८७॥ नमस्यवयाञ्जुधगन्धवहनीकृतेः॥ क
 ल्कैः समर्द्धमन्त्रिगस्तनकर्द्धववर्द्धन॥ वात्रद्यपियथली॥ अनायनाडिमाकनेसभा
 मादिगोवात्रवनीमनसर्द्धनालिजवर्द्धनीनं॥ सवालकद्वनादिदीमादिवानवनी
 ननमर्द्धनालिजवर्द्धनी॥ धूसरस्त्रसनाञ्जुधगन्धमर्द्धपिष्णुमादिवानवनीममिह

व

^४ निम्बत्वकैका (थरगयुक्षलन) निम्बत्ववाधूपमर्द्धसो कूमात्रसगन्धिसूरागदिगु (धमय
 गैरुवमि) ॥ ह त्रिनालरागः पयै किंशुकक्षेत्रराजो कं यवक्षेत्रराजो कं कदलीक्ष
 लराजो कं जलेनयी द्वा लेयमाणुधरागकदलिंगनी त्रामनाथनी ॥ ननाहालाहलसर्प
 चवूर्धनिभिर्न कदलनीसकाहसायिनी ननलिंगादिकं सुदमेन नयूनः कंभः पादू

८२

^{रस} ^{नि}
 र्वैति ॥ माहिवेष्टकजहलिककैट स्वदनेलाणीमईनादीनी वृद्धिः ॥ जानापूर्वतिलनयिषु
 रगमूद्वर्णय इच्छि सिनैरवमि ॥ माहिवनवती नववी कूटबाला नागवला रिर्मदनासन
 वृद्धिः ॥ नफादकक्षालेनाद्विर्मलिंगसदृष्टैरवमि ॥ द (धु) त्वलमूल गवाद्युनन
 यिवनू ॥ अगु कालगर्हिदीरवमि ॥ अथगन्धमूलं घृणनयिवहैर्हिदीरवमि ॥ वलाश्चै
 न

सं
 गितलासिदणकनागिलीमादिकमधूमूर्कयिवज्जर्हिशीरुवमि॥वालाभूलंजदकनयिष्ठा
 यिवडकवाहीनाभयमि॥मववूर्कभाभुंमर्ज्जसंजहिमधूयुगताइरुनासर्वगर्गुर्द
 रवमि॥बनादक्राकाभूलंअनुकालवेरुवधनाज्जर्हिशीरुवमि॥कलमीधमर्कुरु
 यदुक्रुवदिः॥मभूजदधिरुदधेनभुक्रुवदिः॥भुक्रुभाभिरुदधमक्रुवदिः॥५

८३

समं २
 लीगुथीलामुंनैलायिलायिवक्कवदि॥अमलकीवूर्कजलनघुगनमधूनाविका
 लेखलिदगु।वहुव्यंगानुधुधरुवमिप्रहा२४नममि॥अमलकीवूर्कगिलवूर्कघुगमधूना
 रुदप्ररुधेरुली॥अप्रखेगलुलामूलंअभगन्धगिलमवानगुठनसमत्रसीकल
 रुदप्रशोवतममि॥अर्जनचक्रुर्कदुधदिनारुदप्रद्वर्षपुधाहोमिगपैनायूः॥अमलकी
 (ज)

नसयलेकं वाक्वीवृहकधेकीयिवन्यागर्जुकिहीलराजनमासनय २४४ भाग्य ४॥ वाक्
 वीवृहकधेकी नकुशजलनकीकिकेनदू (गधनवायिवरु ससासनयवायुधनः॥ य
 धुनीवृहघननरुधुधिसकाहनद्वि नखवर्षाकमिः॥ सनवीजवृहयलेकी नक
 भासियलेकी नकवृहगवीहीप्रधमनावद्वप्रनन्यप्रत्युधमभानावभर्कधुयंतीत्वा

८४

सनादिकं नगुदत्ताय यरुमारुधुयन्। जीर्हदू (गधनराज्ययन् वागनयवर्द्धिः॥ सफाहंनु
 यंयावप्रथाक्रियाग (अरु नक्रियाः। ननः कभदयः यनकि यूननूरुकि वृत्ति। गमाव
 लियलिगनहिना जीवगिगानिय २॥ नकावटमूलं घनमधूना विगललयदमागुरुक
 परु (थेवरुली॥ अमकीहनीनकीरुंगनाज पिप्यली मजीव लाह वृहानि। मधूभर्क

हल

घा

नासां। उद्भवनेप्राप्तगुठिकीकूर्यारुमाउठिकेकैरुद्रयत्मासनगुणनामः॥ कूमात्रीयत्र
 भकंदधनदधिपूर्कैराकृष्टम् सकादनगुणनामः॥ यवगिलाध्वजन्वा नागवल्मासायान्
 दि द्विगुणगुठनरुद्रयत्माहावल्मा रावति॥ रुद्रालीगुठकीगुठगहनोक्तानुर्कजलादि॥
 नाराकृष्टमाहावल्माः स्यान्॥ सर्वागुत्मानंदवर्माकालीरावयम्॥ मरुदधनायदीसमाधिनिदि
 वी

८५

कांडिकेन

ध्वम्॥ वृक्षकल्मसीनाशवृष्टिमुसहा नायशककुलुकादिवद्विषटलः सफदधामः॥
 ॥ अथरुगवन्नाह॥ नृनकुमल्लीयैपिष्ठाभित्तमईग्रहभितः भूतविनयधमि॥ कुग
 स्यात्तान्ननस्यवाकोष्ममूर्धसधेध्ववीकर्कपूत्रयत्कर्कप्रागताम॥ ४॥ भुक्कमर्कटमेल
 वादशान्॥ कटर्कपिष्यलीश्रमलकीहृद्राववाभिभिद्रांवेनघवटिकीकूर्यारुताऊरना

कै२

नि

लोदकेनमृत्तडाभेनक
 नप्रवर्ति॥ ३

देवदत्तः

१ कंठकं मधुनां जयं सर्वं वदुः शो ग नागः ॥ कांठिकं नैलं सैन्धु वंदुर्वा मूलं च कास्य निघृष्टा ॥ ३५ ॥
सर्वं वदुः शो ग नागः ॥ मधुयिष्या ल्या वा ऊ प्रमु ॥ क र्धु गृथं मधुना ऊ प्रद्रा ल्य न्धना म भां धा म ह
लं घ्रा त्वा कं कं मूलं न धु ला द कं न यि व नुं नो सि का पा न द घां घा न्ना सि क पा न कं न भु व नि ॥ ३६ ॥
ला लि का मूलं च व द्वा न ल भु धी वि न भ्म नि ॥ गु ऊ मूलं न द न क की ट वि ना म ॥ ३७ ॥
ग व द्गु र्धं कं कं ट व दं प य त्वा द सु द्ध म द न क क ट क टी न भ्म ॥ मूलं क वी र्जं पि पी गु न क च
॥ ३८ ॥ अ न क क रं द रं न स म न पि न भ्म द श ल म क पा न कं ति न भु व नि ॥ का ष्टा द्म लं म लं न भु

रुद्रः

ना २

दनी कृषं पिषा व र्धना म कं घा दि वि न भ्म नि ॥ द नि ध मी र्धं भु र्धं द्वा ग दी न भु यि व त्थ ल
म कं कृ म शो ग ना म ॥ मा हि ष्य द धि र क रं क ना द नि सा न ना म ॥ आ म्नि रु का स र्ध थ ॥ क
ट उ व क ल रा ग द्ध म म नी व र्धु उ भु धी ना म क रं ग ग व न कं ध यि व नु ॥ गृ ह धी ना म ॥
अ मं की पि ष्या ली वि नु क र्म र्द कं पू ना न न गु र्धं म धु स म रं द्ध प्र मु वि का लं का म ॥

मथा २

नमः

ॐ

सविनामनी ॥ हनीनकी वृत्तं मधुनामथाखदिनी गकनयवपावागुं रुद्रयम. कृदिना
गनामः स्यात् ॥ आद्रकजीत्रकथं दध्नाम (कुनवायि वल्लवधसदिनं मृदु ककु विनामनी
॥ मर्क नापव हानी सम वा रुद्रयम ॥ सोहीजनमूलं काथं वायिवदस्तनीयदनि ॥ हनि
नदी ॥ उगु कर्म ईकं वमसु नायि वेत्या हनामनी ॥ जीत्रकं गुं उन रुद्रयम ॥ हनावा

६७

मथा २ पु १

संभव

मानस्य स्यात् ॥ पवे हानी दध्नायिवदाम वातनाम ॥ कद्रुयं विउद्रं दनाम हृ काष्टं
यिवदाग्निर्दायानि. किमप्रावितस्यनि ॥ हनीनकी गुं उन रुद्रय ई नामावितनम्यनि ॥ ह
नीनकी गुं रुद्रय दाम वातनाम ॥ ह्वदिनि दयायि कृ लया क्क हूनाम ॥ अनीने
वदद्रु विस्नाट ककू नडिं ओं द्राद्यानादिकेनाम प्र ॥ कामममईक मूलं कीद्रिकेनयि

हलं
 पूनर्थे गुठं कदुर्गल नयिवन् ॥ असावित भूमि ॥ अरुन त्वं यदुनादि नारुदय प्रहृद
 प्रव्यथनाम ॥ ४ ॥ विस्वदग्ध गुठं नरुदय प्रहृद कौसावनामः ॥ मातुली गले संगुठ नयिवन्
 भूलन भूमि ॥ गुठं भुवि नांदया सर्व ॥ असावित भूमि ॥ कटकं मधुना अरु प्रसर्वादिना
 गनामः ॥ काजिकी वेली सेवदूर्वा मूलवका ननि पृथ्या अरु नाव हूः भूलनाम ॥ ४ ॥ गुठं

रु

उद्यत नरुदय कौसावित भूमि ॥ गिरुला वृद्धं यम मधुना नरुदय प्रस
 र्वना गनामः ॥ हनी गकी वृद्धं यम मधुना रं दं यं विकाले अलिह दान ॥ असावित भूमि ॥
 वासक यं अगव वा वृक्षी यिं यि यली यं यं वृद्धं कल्प से न्ध वैन मधुना व वटी दूर्यारु
 नारुदय दान ॥ असावित भूमि ॥ सुख न व मधुना र व मि ॥ वृद्धं कौसावित भूमि ॥ ४ ॥ यि य ४

क

लीहनीरकीवासकैखदिनश्रमधूनागुटिकीकृत्वारुद्रप्ररु(थेवर्ली॥यमानीभुठीहनी
 नकीसेन्धवान्समाहृद्रयसर्वाजीहृतामः॥गुदूवीनसमधूनायिवेत्युमहना॥समासह
 मेकन॥दग्धमियलीवृहृद्यनमधरिःयिवनूनहडागकाभदयानभधकि॥लज्ञा
 लभनयूरुधामूलमंजाभादकनयिबुलपयक्रुद्वीमूलरुद्रयन्नामं॥गुंरुलांनैलि

८८

नं
 ॥जीवना॥

भुष्टीलापेशानरुद्रप्रद्वर्गुहृरुवमि॥द्रयकावीजमनीवनयिवदिनगुपीयायनागंमः
 ॥गुंरुलांनैलिकाकृष्टमृष्टिकाएजगजकैसहकागोस्ववीजलाहृष्टकायिकैकनृरि
 मारिहनागुगुलूनकैगंधूयपित्ताननमर्दप्ररुनःसकाहैवधुस्रायप्रत्कभनंजन॥म
 प्रनयिहृष्टगनाजनसात्यांगवपेंधृमयकानभधदधंश्रासकाहैकभनंजन॥यू
 न

मनंकुर्षा२ क२

^(३५)
 नववधुयाः काथी कूर्यान्धो उभगु धन इल राजे कं स्याय परुनः ॥ ७५ ॥ लेपित्वा ॥ ७६ ॥ नज
 शूर्युर्ध्वं नद ग्राह नसे लभ नावमक चन्धमन् । अनेन नभस्य गमकं न नरुन ॥ ७७ ॥ मि विज
 नी प्रिकट्ट गन्ध कंसर्प यूर्ध्व कृत्य वर्धिका मध्व कृत्वा इल दध ॥ ७८ ॥ ख वर्धिका क मध कट्ट
 नैलं ग सु सननं विन्दु दमयान ॥ ७९ ॥ वलिय निर्गन स्यति नृगन मर्दिन न सन कू सूल पाद्य
 न

नात्यक्त २ बालूका सति न २ ४२ ४२
 दिनि र्वनि ॥ सशान वनी नमर्दिन गन्ध कमा स क सदिनं न स लेन कं मलि श्रीर्लक्षि
 पश्यामि ॥ ८० ॥ न द्यत्यक्तं नमू विंका यिदिन नैव द्दि दानं न न स वन्धं रु सत्कं यदि ना ॥ ८१ ॥
 ॥ गवत्सस्य पुथम विष्नी गृहीत्वा गुटिकां कान प्रत्यिधु गग नमूलं यि कू व कू य ॥
 नृकां गुलिकी रु द मि त्वा विषी रु द न पुर वनि ॥ ८२ ॥ नृवी जं वी जं पू नृवी जं ॥ ८३ ॥ नी व वी
 पूनका

रुक्मिणीपिताशङ्कादीनयनायसंनययद्यत्तनुरुक्त्यैकयावद्वपुःकरवनि॥ अ
मलकीकूषमूल्यलमासीवलानुषांलयनविवलोकभांघनाः॥ कूर्कत्रदकमकुरु
मनदग्धमधयनान्निर्गकत्वामुदमन॥ दुर्जनश्रुतिकेभांइतिभुक्ति॥ नानुिक
लेकसेवनश्रुतिकेभुक्तिमिययदधीशायमितोसैनसैनभुक्तिकदद्यात्पूत्रववाधिर्नम
लि२

२१

१ हं गजां विष्णुपुलयेनमभा॥

निर्गकत्वामुदमन॥ दुर्जनश्रुतिकेभांइतिभुक्ति॥ नानुिक
लेकसेवनश्रुतिकेभुक्तिमिययदधीशायमितोसैनसैनभुक्तिकदद्यात्पूत्रववाधिर्नम
लि२

अमृकी आया चिदि साग कृ मि ॥ निर्दूमा (उमे ना पधम् ॥ मयूत्र भिखा यर्थ मेलन खाता
 दोद द्रादु (भा रुव मि ॥ अय त्रा जिता मूलै यूषा उत्थाद्य के र्य दामुं हन तरे लेन नया लेक ऊ
 लियाम य रूपा उता सीयू नूषी वभी क रा मि ॥ द (धु त्त्य लमूलै यर्थ मेलन द्रादु भामान ॥ ८३
 य मि ॥ विउं गं ग ग न क र्म मदि त्र पाद द्राद नि छी ना भय मि ॥ मनः भिना ना ग क भ न वू

कृषि मं गु (य मय तारि मा हि म ऊ य द्वा भी क न र्थ ॥ क र्मु त्री ले धू स त्र क स ह द वा रिः
 क र्म निल क र्मु ला र्क व भामान य मि ॥ उं व ल विरु विलि २ वूल २ य ग मूं व २ स्वा ता ॥ स्व
 लिंग स्था प त्रि न क क न वी त क स मी सं स्था य स ह मु म कं ऊ य न्ता म वि द र्हि न न प्र स्था य
 न ता म नुं य ठ स्तां मु ४५ वी वि धा आ मय न सा व भ्म रु व मि ॥ पूर्व स वा द भ स ह मु शि ना

मनसिर्दत्तं कृत्वा । नमः प्रणाली श्रमकीव भी कृत्स्ना ह ॥ स वायुर्न भ्रमण न रु स कृष्ण
वन्द्यो म प्रार्थना गारिम निर्दु कृत्वा । कीर्ति न सिद्धा द्व भी र्वानि ॥ अजय लिंगमादा
य कदा भी भन सृष्टकेः । क न ट क स्याथ वायु र्द्व व न्ध प्र कृ कृ म् न ॥ सत्सर्वेकमना
ः कृत्वा भूत धर्म्य प्राग न भानि ॥ अष्टवत्सदा रत्ना षु कृ कृ म् न मूर्ध्नी ॥ मूर्ध्नी सिन

२४

म न

१ मूर्ध्नी कृत्वा भूत धर्म्य प्राग न भानि ॥ अष्टवत्सदा रत्ना षु कृ कृ म् न मूर्ध्नी ॥ मूर्ध्नी सिन
कात्तिलाख्य साधु सृष्ट न स्याथ वायु र्द्व व न्ध प्र कृ कृ म् न ॥ सत्सर्वेकमना
मूर्ध्नी स न मूर्ध्नी यदि स न स न क र्द्व प्र मीथु नात्यर्व षु कृ कृ म् न मूर्ध्नी ॥ क न अका
न पि त्वा तु या न द न पु पु न म् न । व न्ध ना च क टी सृष्टः षु कृ कृ म् न ॥ अष्टवत्सदा रत्ना
साधु र्द्व ल न ला कारी कि न ॥ अष्टवत्सदा रत्ना षु कृ कृ म् न मूर्ध्नी ॥ कृ स र्द्व म

नी ॥ अष्टवत्सदा रत्ना षु कृ कृ म् न मूर्ध्नी ॥ कृ स र्द्व म

लंबावत्ररुनयादगलीमुद्रपणुकसुमृती॥ भिगकाकजंघामूलीभिगयप्रकभत्रमधु
 शिल्लयाहुकसुमृती॥ विष्कुकामूल्यपणुंशवसुमित्वा कनीवन्धप्रमृणुकसुमृ
 नी॥ हनिमालत्रसीरुनयात्रदयिप्यलीसेन्धवकसूयानावगविष्ठा॥ कौपिष्ठा
 ईवरेनरुनयादगलीमुद्रपणुकसुमृती॥ ईवलीवईभृगंगरुननिघृष्टालिगलियदईलिंजि
 लिं

२५

लिंजि

२॥ जेनवककटीहनाहल

रुवमि॥ वाविबहुमूल्यदयिप्युकागमृणुंशयिष्ठाालिगलियासमाधोत्याटप्रधान
 यंनईरुवमि॥ नकादकंशालतागुभाकि॥ कयर्दकायाकप्रयात्रदयूनयि त्वासुख
 स्थायपहुकसुमृती॥ द्यागमृणुंशवदुवात्रुशीसिकादंरावयुरुनाईनौरुईरुव
 मिलिंजी॥ अषधीमूल्यकामात्रीमूल्यधूसुत्रवीजंकर्यूनत्रलनयिष्ठाालिगलियद

पि त्वास्ति र्मकामप्रदुवनि॥ सेन्धवटगशकप्यूनधाषकवूर्धमधूनापि कृत्स्निगलपा
 रुधा॥ या नावतयूत्री र्ममधूनापि कृत्स्निगीयलिया कामप्रदुवनि॥ कामावी मूलनाम
 लेनसूत्रनदुः (शस्ति र्मरुद्रप्रदुवनि सा॥ यद्रुमिनि जीलसिका सेन्धवेन मिष्ठी कृ
 त्वा त्वा नर्त्तनी लीया रा नावतयूत्री र्ममधूनापि कृत्स्निगीयलिया कामप्रदुवनि॥

८६

नक्षि० ज्ञानरा२

ववकमि२

प्रावलिमूल

कयसार्गशयानप्रदुवनि मिथिली मधूरिर्लिया नदुवनि स्त्री॥ नामदूनी मूलसयग्रवर्षि
 त्वास्ति र्मगीयलिया कामप्रदुवनि॥ रुद्रप्रत्या मूलियि कृत्स्निगीयलिया कामप्रदुवनि
 लयनवन्धना नीनसंभमः॥ यिष्ठा यला णवी रुद्रकुलया मधूसरिर्लिया कामप्रदुवनि
 विग्रस्य वन्धना नीनसंभमः॥ णवराय नर्गवूर्धमधूनापि कृत्स्निगीयलिया कामप्रदुवनि॥

काव्यि१

[illegible]

नमः गुरुभ्यो नमः ॥१॥

विष्णुः शुद्धिः ॥ अथ ॥ सर्वव्यापकः सर्वविज्ञानसंयमी ॥ ईहाला कालवदनहसहसहता
तलवज्रस्य वद्विनश्चरानाम् २ सर्वभद्रवागवर्षिम् ॥ मृमृमृ २ मृष्टय २ यः सर्वपात्री
यी ॥ अथ २ इन्द्र ॥ प्रवत्सन्कुञ्जयन्नाका भक्तो रद्व्या लोकप्रदा नमद्यादीन्ती भयनि
॥ ईहं त्कानरुं २ रु २ रु २ रु दू ॥ अथ ॥ नकी उत प्रनुः ॥ ई सर्वविश्राधियनमयनमनु

मनुनाभनसर्वजकिनीनांशसम २ वन्ध २ मूर्खकीलय २ हूं हूं हूं हूं ॥ १० गिनगत्ररु
प्रवणनमनुः ॥ ३ हिलि २ हूं २ ॥ १० ह्यननमरिंकामरिमन्यधूलिंदग्रात्सर्वयला
मनि ॥ ममाममा ॥ १० ह्यननघोंवाद्युःयलायन ॥ वदूआवदूआ ॥ १० ह्यननहस्ती ६
यलायन ॥ १० ह्यननगधुयलायन ॥ ३ डीं वदूकनाथवधुमहा

२८

नायहूं हूं ॥ १० ह्यननगधुयलायन ॥ ३ डीं वदूकनाथवधुमहा
३ ग्रासम २ वधुयुवधु हूं हूं हूं हूं ॥ १० ह्यननमहिसःयलायन ॥ ३ प्रममदंनमदय २
वधुमहा नायहूं हूं हूं ॥ १० ह्यननयायत्रागःयलायन ॥ ३ काधनसंकाधनरुदना
यहूं हूं हूं ॥ १० ह्यननगधुयलायन ॥ ३ डीं वदूकनाथवधुमहा

नेनभिखावधूत्रका॥ॐ अथलसंयतश्रमकसामुखीकीलयहंरुद्र॥मदननवतु
वकुलपूरुलीकृत्वा रुद्रहनिनात्रनलिखित्वा नस्यामूखपुक्षिणीकीलयत्रदुः
यश्चानिखनयुगिवादिमूर्खकीलयमि॥ॐ सर्वमानरुश्रनश्रमकसामुखीकीलय
हंरुद्र॥पूर्वदुद्रुद्रायाकीलयजमिमागमिहमयमि॥विक्रानननयनवत्त
व

२२

रुद्रनरुद्रायाकीलयजमिमागमिहमयमि॥ॐ अथलसंयतश्रमकसामुखीकीलयहंरुद्र
हंरुद्र॥ॐ अथलसंयतश्रमकसामुखीकीलयहंरुद्र॥पूर्वदुद्रुद्रायाकीलयजमिमागमिहमयमि॥
ॐ अथलसंयतश्रमकसामुखीकीलयहंरुद्र॥ॐ अथलसंयतश्रमकसामुखीकीलयहंरुद्र॥
ॐ अथलसंयतश्रमकसामुखीकीलयहंरुद्र॥ॐ अथलसंयतश्रमकसामुखीकीलयहंरुद्र॥
ॐ अथलसंयतश्रमकसामुखीकीलयहंरुद्र॥ॐ अथलसंयतश्रमकसामुखीकीलयहंरुद्र॥

यत्राजिकगावृण्डलप्रपेमा धंदवदरुमहिलिखा मालामन्रुधवषयित्वामदनयूरु
 लिका इदिप्रक्षिप्य स्तुति काष्ठमध्याप्रक्षिप्यगुणः ॥ उं वं वं मं हा ना व ध वि र्छि पं त्वो मे
 दने ॥ उं वं वं मं हा ना व ध अ म र्कं हं न ध गृ द्वा य प हं दू ॥ ७० निजयन ४ म ४ म ना ७ मो ८
 वा य धा ना ए वा नि न व र ॥ ७१ वा ना ७ १ ३ ल य मि ॥ उं ज य २ य ना ज य नि र्जि य न र्क ३ २

१००

२६२

वा २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 मीर्षा कर्म कृ नू २ उं वं वं मं हा ना व ध हं दू ॥ ७२ वा ना न क य ट
 लि रि त्वो नी स स प्र व ष्य वा ह क र्छ णि न सि क टो वा धा न प्र नू ॥ य न प्र नू न रु व नि ॥ उं वं
 वं वं मं हा ना व ध न य स २ ख २ ख २ हि २ ७१ वा ना २ म न २ मा न य २ अ म र्कं हं दू ॥ ७२ वा ना
 न क य ट लि रं वं शि त्वा पूर्व व त्पूरु ली का य प्र क्षि पं यी उ ल प्र मा ७ ना रि की ल क वा ध
 न

四

[illegible]

٩٩٩

४२

स नो वधदं हं ॥ पूर्णं मानकू कू नमः ॥ कुली गृहित्वा साध्युगिक निद्वयं दद्याद न्यानी विदुः
द्वयमदि ॥ ॐ वधु महा नो वध जां जां जो धा न नू य वट २ प्र वट २ रुत २ घा न य २ क ह २ प्र मू ६
न २ प्र रुत न य २ की ल प्र २ ऊ मू य २ रु मू य २ मू मू क हं हं ॥ रु रु कू र्म समा लिखा गाल
के न य ७ गु ली । वधुः या द यू जी का नं धां का नं मू र व म ध न ४ ॥ ग ह्ने द्वि श्री ग कालि श्व नू सा

取

धक नु पृष्ठतः पर्व ॥ मालामनु शसिव वृष पूजा रुक्मिणी समावृत्त ॥ ॐ वृकाय निर्वृता स्य
कूर्मवर्देनाद्यादयम् ॥ न कस्यु शसिव वृष पादयोः कुरुति हि मेत ॥ नाथय दामयाद
नामूकं भव भानम ॥ सकवा नाना कुरु मूर्खी सुमृपानि ॥ ॐ विलि मिलिलिलि गह्वं
॥ बहः सं ॥ ॐ वृकाय निर्वृता स्य ॥ ॐ वृकाय निर्वृता स्य ॥ ॐ वृकाय निर्वृता स्य ॥ ॐ वृकाय निर्वृता स्य ॥

[illegible]

प्रलिख इवी द्विउज्ज्वलं कृमनसनिर्वाभांकुभाहसं कामात्कटरीषधी ॥ गजमदमगाल
 कनकनजस्रलाकृंकुमेद्विदरुपसमन्तादुनादि ॥ ॐ भिनसिद्धीं द्विद्विक्तीं नारोष्ठं मरु ॥
 नमो मनुभवानकसुष्ठुष्टं संवत्स्रीयूत्रयकवालसीयूटपुद्विपाद्यनमधूपूत्रिन
 मदनेमयवेष्टुमिवा ॐ कुरु प्रववभिः स्ताने निखनेन ॥ वामपादनाकमयजयन् ॥

१०४

माला २

(७५२)

यं वविं ॥ निरुक्तं प्रशस्तं नदीतन्नि ॥ ॐ आकय २ माहय २ अमूकी भवभांकु नृस्वाहा ॥
 उदनकीटं सुवूर्ध्वं कृत्वा शुक्रा नामिका नकाया वटी कृत्वा रिमन्तु खानवानेन्द्राद्व
 भीकनादि ॥ ॐ शुक्रयज्ञो मेरेन स्यायक्षोक्षो नजदको मृदकस्य माल्यं अनेन यूर्ध्वं नयवृ
 र्दिनी जीपदयदधावनिमूर्च्छिनी जी ॥ ॐ ध्वनगृधिनिखादिपिव २४ नृविशिखः २
 धा

हं २ सः २ ॐ वधु महासना द्वाय पश्चात् ॥ अथ वा ॥ ॐ संक्रा द्धिर्धु हं हं हं हं ॥ सर्व विषीना ॥
यमि ॥ ॐ नाग निवास लेह न रुद्र ॥ अरि मक्ति न मृदा द्वात्रे वि क मा वा स र्थ्य प्रवक्ष्यामि ॥ ॐ
आ धि का (श) अरु वी व भा क नृत्वा हा ॥ स्यान्वि (मं) अरु य प्य दाना द्वाभी क न र्थ ॥ न भा वी
न ना ग म मे शु चि र्हा हा ॥ ॐ द क ना रि म क्ति न न य हूः दाल ना रि मि न ह

कि॥ उं ह्रीं नमः शिवाय नमः ॥ आदिष्टास्तथैव गत वासदवलनतत्रगजुठ
पद्मपाणिर्नरकमन्त्रमुनिर्विषयात् ॥ सूर्यावभिशकर्कसादिविषनाभाप्रति॥ उं वाम् (ध्रु) क्रि
मः यनाजिनहूँ ३ नक्षत्रस्वाहा ॥ सफारिमन्त्रितल्लूर्क्यनुदिभिद्धियन् ॥ नृकंसखा
ने स्थापयन् ॥ उं जम्नीसु मूनिभाहनी सर्वदूषप्रभमती स्वाहा ॥ योत्रीनरुवनि ॥ न

五

नि २

य

मम्यद्यमहाक्राधाय इतु २ वृत् २ निष्ठ २ वन्ध २ माह २ हन २ मग २ हं हट् ॥ पृष्यादिकं यनि
उप्यदानादभाषातयति ॥ ईनमात्रत्तप्रयापउंरः सविस्मनेखाता ॥ कनकी पृष्वीनि
कया सर्वहृत्ता नाभमति ॥ ॐ ह्यकल्पवीनाखाणीवधुमहात्रायधनकुनाताशिरुदः
नियतिनमः ॥ ॐ ह्यकल्पवीनाखाणीवधुमहात्रायधनकुनाताशिरुदः ॥ अथरुगवानाह ॥ ईवधुमहात्रायधनसर्व

१०५

मम्यद्यमहाक्राधाय इतु २ वृत् २ निष्ठ २ वन्ध २ माह २ हन २ मग २ हं हट् ॥ अततवधुमहात्रायधनध्वात्तासर्वदुष्पा
॥ ॐ ह्यकल्पवीनाखाणीवधुमहात्रायधनकुनाताशिरुदः ॥ अततवधुमहात्रायधनध्वात्तासर्वदुष्पा
प्यवलिंकात्रयम् ॥ उदकं नदीयहालनाहूलनिष्ठिर्न ॥ नाशेवनदयुस्तेनखधुव
यनिष्ठव्यहंकात्रेधविशूक्तगदभाषति ॥ मगजलूकवूर्धसहितलाक्षानीजिनवर्ध

लो

हालनासिमुयसंदृष्टानगमखवनि॥घृणनकर्ध्वदुर्मसधमात्मनका॥हालाहलसर्ग
 स्यालंगुलंकेदयम्॥नगमामूकभिरवध्यावत्तुनितावनतर्ह्येन॥मयैरुमासक
 वदुस्यमधूस्तनयैःश्रीपुलाकनुरिःमासकैकनुरिःसहितलाक्षत्रजिर्वस्तुव
 र्हीद॥नगमामूकभिरवध्यावत्तुनितावनतर्ह्येन॥पूर्ववदात्मनका॥भखाटकमूलवस्तुमू

१०६

लमकाक...॥धूसूनययमध्वरुंउकंसगन्धियूयाः
 मध्वप्रदियाद्यानमागुहाभिन॥८०॥लैरुवनि॥काजिकनभनभादः॥कुकुली
 गरुणायमिमाधूपिर्नवष्टिर्नमयूनविर्हंसवानप्राभिनविर्गुदनमि॥प्रवसवान
 भाद॥काकदुदयनूधित्रधमंमुयगुनत्यहालखन्यालिरित्तामर्कयस्यविकृपी

^व ^{पर}
 प्रक्षिपेत्सकाकेलखाग्रं ॥ उंकाककूदनीकू ईनीदवदरं काकनरुहायप्रस्वाहा ॥
 रण ॥ कार्त्तमर्हकृत्वास्त्रीविष्टीव भिषकयागिकासैर्गीप्रक्षिप्य ज्ञापयन् ॥ गस्यामार्गीव
 धनं ॥ स्त्रुहीशीत्रराविमहिलमेलसुखभाष्टिना नूहाः ॥ प्यगारवर्गि ॥ मूर्च्छिजनमाहः
 ॥ विनालीगर्भभाषा नानाजीवार्त्तभाषा द्वाहीरिहो धूयात्रिष्टुनप्यम ॥ माक्षिकधूपन

१०५

६१

^{६२} ^{५२}
 माहः ॥ प्रसूकयालप्यमर्हनेन नूहा निगालीवह धारणवपित्वादरुं सुक्ष्मकर्मप्रवि
 प्रीनप्यम ॥ हसुं कालेनात्माहः ॥ स्त्रीगर्भभाषा प्राधूयात्रिष्टुनादिनि ॥ गुग्गुनूधूप
 माहः ॥ रुकमेलवह्वर्जनीग्रहवर्ण ॥ ४ सप्यादृष्टमर्क ॥ दीपनिर्वाह ज्ञो गन्धक
 वूर्ध्दनात्पू नहलनि ॥ मूर्च्छिनीशवालजलो करुं कवसाहिः पादो सुक्ष्मपित्वाद

क

लीयप्रधवेष्टाहर्लगात्रप्रमगिनदमग्न॥स्रुहिमूलगुठनरुद्रप्रनिडाखवनि॥काः
मात्रीमूलनि॥लाघावन्धप्रनिडाखवनि॥नागवदनेमूलनिडाधपूषामूलनिडाखवनि॥
ले॥शिविष्टादुर्लगादूदकपनिडाधपूषामूलनिडाखवनि॥॥मालीमूलनिहिगुगुलिकाखननात्यूष
यावन्नाकादुर्लगादिनडाधपूषामूलनिडाखवनि॥स्रुहीक्षीत्रमर्कवी

१०५

ग्रीष्मवर्षागुठनरुद्रप्रनिडाखवनि॥दूदूदनीयूर्ध्वनद्याटकतासीमुद्रप्रदाहाननकना
नि॥यवन्नाकादुर्लगादिनडाधपूषामूलनिडाखवनि॥कैतकीमूलनिहिगुगुलिकाखननात्यूष
सगोलमूलनिमूरव॥पूषानरुद्रप्रनिडाधपूषामूलनिडाखवनि॥॥मालीमूलनिहिगुगुलिकाखननात्यूष
माध्यात्रिकिश्चित्त्वपिबन्॥मम्राद्यार्गनरुद्रप्रनिडाखवनि॥॥मालीमूलनिहिगुगुलिकाखननात्यूष

निशवर्मनो कर्मरुलनमर्जनि। उषर्नी चर्वयित्वा जिह्वा मलं स्थापय ॥ नय कललं वाटध
नान्नेददति ॥ सूतककात्रयैतस्मिन्मुष्टीया नागर्यपदनी ॥ ७७ वमनपुर्वमूलं पृथः
उद्धृत्य वायुमनं वायुमित्रसाक्षे वन्धयत्काष्ठं यमं न वीरयं वात्रयति ॥ गृध्रव
सा ॥ उत्तुक्रवर् ॥ यो यमो वै दुकात्रुकातिदूत्रगामनं रुवतः ॥ सर्वरुलममस्तु रुतः
पा

गमना १

१०६

सुदिवं प्रसन्नं चिन्मिधिसास्यन ॥ उममूकमिश्राहृत्वा वासपासिंहिना गृहीया ह्रमो
न स्थापय ॥ उद्धृत्य वायुमनं वायुमित्रसाक्षे वन्धयत्काष्ठं यमं न वीरयं वात्रयति ॥ गृध्रव
सा ॥ उत्तुक्रवर् ॥ यो यमो वै दुकात्रुकातिदूत्रगामनं रुवतः ॥ सर्वरुलममस्तु रुतः
पा

मव

लेप

कृत्वा २

अकार्यः पत्रिहगह लीमूखे किं स्यात् मदात्मकं रावप्रहादु (गारवनि)। त्रिलाहवेषि
 ननानिर्जनी मगुदं लोहं सार्द्धं सफु ग्रयामासाः सार्द्धं द्रव्यं यं यं ३३ उरुसु ग्रामासाः
 नयिस्व नृः नामान्नः नामुमा २ नमी १ नूयामा ४ नगी २ सवर्कमा ३ नगी ५ ॥ नृक
 मा २३५ मा ३५ नका र्णसाः ५५ कतिमालिखा नृवतनामविदर्हिर्गजं (ध) दकं

११०

बंधं

लिम्पि विषयकया ले नसंभूटी कृत्य मृनक सगु क्षयव्यसि कु कनगु न्यज्य
 चित्तं ५५ नृजाप्यं नृना ग्रीयावत्सि कु काविलीयन। सनक न्यामप्या नप्रति ॥ ५५
 कट २ माहये २ अम कीमा कर्षयजः स्यात् ॥ कपिं नृ रुलं वूही कृत्यमादिष्यदध्र
 लावयत्सफ वा नान्नूननलाधु सित कनंगु कुर्क कि कि सुद्विधनू ॥ इ स मा ग्रे शदः

^ह धिरुवमि॥ कयिंरुं ^ह लैलि प्पानूगनरा (कु लययन। ननुदुग्धं ^{होव} यावय ननु वरि ^ध
 नदधि धिरुवमि॥ अयकघटदुग्धमार्जितं यावयं कानदधि (घेयं घटं र ^{१११}
 मेनदधियं धरुवमि॥ अर्क दीपे नवघटं विरायवदुधमननुक्रियं जलं
 ककुमिदं ^{१११} मिदं ^{१११} पुथमं नदमदि नरसं गृहीत्वामुष्टिद्वयना (धार्ड
^{१११}

^{१११} विग्रासं जलं पुनि ^{१११} उज्ज्वलं ^{१११} नरवपा ^{१११} उदककं ^{१११} रुः ^{१११} षणि॥ अ (धारुसम ^{१११} नरवपू ^{१११}
 यमि॥ नविदिनसंति ^{१११} शंमूलमं ^{१११} यामार्गमूलम ^{१११} त्याग्रपुथग्मुद्रि ^{१११} नददु ^{१११} (ओकटि
 धानिमी ^{१११} मधुनः॥ वदुआ ^{१११} नबी ^{१११} जवा ^{१११} लामुद्रि ^{१११} नददु ^{१११} कस्यट ^{१११} रुलपु ^{१११} द्रुया ^{१११} नयनमि॥
 ननेवलिय ^{१११} पुप्रयटिका ^{१११} लाह ^{१११} धा ^{१११} रुल ^{१११} नम ^{१११} रुमि॥ रुमिल ^{१११} नार ^{१११} व ^{१११} ग्राम ^{१११} या ^{१११} भू ^{१११} र्क ^{१११} म ^{१११} लं

वैद्यवान २

वा। ७। १। २। ३। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।

(ॐ) हिसाहानेनदकाधवर्हिन् ॥ प्रविभान्देवत्सष्टिः स्थितिनिश्चयतूयनः । विमानिः शृङ्गेणोपावक्तीवंप्रवरुण ॥ प्रविभान्कृष्कारुण्यः पूत्रकस्तस्थधानना निभंजमदुकारुण्यानिभ्यलास्फुकाप्रगः ॥ वलुनासंसमाधाय सुंसप्ररुक्कन आनंरुन् । प्रविसेर्नगद्यमद्वाप्यं भानसहसादिमीख्याया ॥ सिद्धीनमद्रक्षाम् देववू-

[illegible]

नमः सर्वज्ञाने सर्वज्ञानी सर्वज्ञाने ॥ समन्वाह न मां शुद्धं रुद्रं रुद्रविष्णुं च वरुणं
मानं यनेति सर्वज्ञानि सत्यमनद्वयमाहं ॥ न तथा ननेवमा गद्यकर्तुमध्यवि
रावमन ॥ ७८ धूम सर्वदधमसर्वसंनिहिं यथा ॥ न थानेति पुरुवित्वा तुला कश्च
प्रयत्नमि ॥ नासायां च न थ अध्यात्वा ज्ञानी न सर्वगंधकं ॥ द्विजायां च न थ अध्यात्वा दू

^{५५}
 नं स्वादं प्रविष्टम् । स्वलिङ्गं च त्वं ज्ञानी न सर्वस्य भक्तिं ॥ मित्रा मध्यमं च ध्यात्वा
 त्वो सर्वसामर्थ्यं विद्मः । यत्प्रयत्नेन विद्मः वायुना समनसीकृतं ॥ निरुद्धं न गुरु
 व, न देवयुगि विन्दत । अन्तिकं प्रोषि क्व वन्द्यं मा कृषिमान् दानकथा ॥ उच्चाटनं च
 सर्वं नैव ॥ ^{११५}

^{नीकं}
 नाकिनी दृष्टा कृष्णकृतं जीकृतम् । दक्षिणा कर्षणी रुद्रा, पूनकं दानि पात्रिनः
 ॥ ललाटस्था गुमादृष्टिः ॥ ज्ञानशीतलकं मसा ॥ नासिकागुहिकादृष्टिः ॥ स्फुटं कनर
 हि कुर्यात्कीदृशं नायकं ॥ नृदी वृद्धयूतकः ॥ नेयकः सनपवृद्धिस्तु मं मृक
 : सप्तलक्ष ॥ विनिर्जना हि यन्मांसं पूर्णं दृष्टिं निपात्रयम् ॥ सर्वसामर्थ्यं युकुटु

२॥ दत्तलक्ष्मी चामुण्डा ॥ २ ॥

[illegible][illegible]

स्यन्दनादर्भनात्यस्य साक्षेः॥ नासिका न क्रात्य कदिनेः॥ हृदयनिम्नात्यस्य साक्षि
 क्राम (क) कं कं कं लखयाद्वि नाग्रहा॥ नखत्रक नादभनात्यसाक्षेः॥ दन्त (म) वात्य
 नासित॥ अत्र न्धस्यदर्भनात्यसाक्षेः॥ भीमाक्षो कालविषय्यया सर्वशुद्धिददर्भना
 त्यक्षेः॥ इका न नाभीका गुरुं का कौ न सा सुदर्भनाद्य साक्षेः॥ अनामिका मूलं ६

श्रौत्व १ ६

कुरु लखयादनामिका सुदर्भदिवसन॥ दहाम मां मार्कत मधुगुरुं सर्वजमीना सुद
 साक्षेः॥ स्नात मागुसाहत्याद (म) वा नू द्विमासन॥ गगुदूर्गश्चादि नाग्रहा॥ गगुसु वा
 दिने केन वा मा वरु मृगु त्यासासन॥ नारु विषय्यया त्यक्षेः॥ नासाग्रदर्भना
 त्यक्षेः॥ नग्रा ३ शीघ्री कौ न सा मित्रदर्भना नू कुरु दिनेः॥ कर्क च न्यभु ३

श्री १ ६

५१२

卷二

पीठवर्तुलकुम्भासमेष्टानकाशकामध्वनेककूबर्तुलकुम्भावलंबकल्पप्रभू॥सूर्या
संवाथ॥धर्मपीठवात्रभवया॥आमंवापयश्चिर्वृद्धेअकनृपविविक्तयम्॥लोच
नामपिनका॥द्वयवन्द्या॥आकविधानिर्णी॥वामदक्षिणकनार्योप्याम्ने॥अत्रचकुम्भ
मेजकन॥धनूर्वाधनप्रायतांनकावापयको॥शमुमासकीपीठमं

[illegible]

[illegible][illegible]

स्त्री देव

सिद्धमनस्तुष्टीयागी लावबोनायनिनिष्टिः। नृवं देवना बलादीभ्य लावपेज्ज
नः॥ श्रीगणेशाय नमः॥ देवकविरुहं समाहिमः॥ यिवन पुं ऊन स्वप्रसिद्ध
कुं सं नृपि॥ सर्वात्म्यास्तिनायागी लावपे देवना कति। अथ वा कवलं सोखी
वपेज्ज रं पावत्सीसूटनी वृज्जु गन नृपसूटमागी

१२४

नारयणी वलुमहा नायदागनरु देवगी साधनयटलः
निगमः॥ ॥ ५००० देवना वरुगवान श्री वरुसत्त स्रिय पाणी पागी तीगदा
लाविनमस्तु नृनिनि॥ ०००० कल्लवी त्रैनाम श्री वलुमहा नायदागनरु समायुक्त
हनुपरा वाहनुन मातु थागना. कवदरुषीयपानिमाध नृवं बादीमहाभुमदाः॥

पुननन मंया प्रह ॥ मंत काले द्वितीयाः ॥ धेनु नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥
 नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥
 नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥
 नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥
 नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥

नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥	नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥	नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥
नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥	नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥	नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥
नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥	नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥	नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥
नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥	नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥	नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥
नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥	नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥	नृवा ने भुर हि लिं रं धीनि ॥ भुरं ॥

श्रीगौतमसत्यादः—५७ नानाहिरुदगठिगययंनुमनु ७३ दहस्वनय ८२
 कौटिल्यपटलः ५१ कौटिल्यनयटलः— ७४ दहस्वनीसाधन ८३
 कौटिल्यपटलः—५५ वायुप्रागयटलः— ७५ दहस्वनीसाधन ८४
 कौटिल्यपटलः— ७६ दहस्वनीसाधन ८५

॥ ५७ ॥ नानाहिरुदगठिगययंनुमनु ७३ दहस्वनय ८२
 ॥ ५८ ॥ कौटिल्यपटलः ५१ कौटिल्यनयटलः— ७४ दहस्वनीसाधन ८३
 ॥ ५९ ॥ कौटिल्यपटलः—५५ वायुप्रागयटलः— ७५ दहस्वनीसाधन ८४
 ॥ ६० ॥ कौटिल्यपटलः— ७६ दहस्वनीसाधन ८५

जीयुष्टामाहं नाथ किमर्थमि च न सहं कं ॥ एक स वि स संहा च
परीयुष्टामाहं नाथ किमर्थमि च न सहं कं ॥ एक स वि ल संहा च व सु महा लाष णी
या स मा या ग न नी श्व रे सु ख नू पी न ॥ य शु या या त्म कं न च

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो नन्दम च लख्या नमो सर्ववर्द्ध मु सुविर्ग ॥
लोकेषां सर्वं न पचि का जिना ॥ सत्वा धर्म हि वे कर्णा नः यावदाहु न स पवी ॥ अथ सम ५१
दे वा च ॥ अ का न र्थ कि भा र्या न च का ले न कि म र्या न ॥ ल का र्थ की म र्या न कि द्वा र्थ नाम
॥ अ का न र्थ ना क्ती म स ह्ज त्वा हा व यू की ॥ च का र्थ नान र्

॥ का र्थ २ मालिनी मृग साधय २ माला काल वृद्धा र्थ मु प्रदिगा सि मा ६
वृद्ध प्रदृष्टान्

